जयंत चौधरी बोल रहे थे और जयराम रमेश क्या कह रहे थे, मैंने सुना है, मेरे कानों ने सुना है कि जाओ जहां जाना है। श्मशान घाट के ऊपर उत्सव नहीं मनाया जाता है। यह हरकत नजरअंदाज नहीं कर सकते हैं, मैंने देखी है, यह पीड़ा महसूस की है। मैं नहीं चाहता कि इस विषय को और आगे बढ़ाया जाए। आज मेरी आपसे पुरजोर प्रार्थना है कि राजनीतिक बहस में जितने हथियार निकालने हैं, निकालिए, पर जहां व्यक्तियों के सम्मान की बात आती है, राजनीतिक व्यक्ति के भी सम्मान की बात आती है, हमको बहुत सेंसिटिव होना चाहिए। डा. केशव, यह बात सदन तक सीमित नहीं है, यह बात करोड़ों लोगों तक जाएगी। ऐसा नहीं होना चाहिए। मैं बहुत ही संयमित होकर, सद्भाव के तरीके से, सदन की प्रतिष्ठा को दृष्टिगत रख कर, विवशपूर्ण वातावरण में आहत दिल से यह बात कह रहा हूँ। मेरा सदन को अनुरोध रहेगा कि हमको अलग से मिल कर, सदन के बाहर मिल कर, बैठ कर इन विषयों पर एकमत होना चाहिए। इस जगह से मैंने किन-किन को सम्मानित नहीं किया! मैं सदस्य के जन्मदिन को सम्मानित करता हूँ; मैं हमारे खिलाड़ियों को सम्मानित करता हूँ; जिनको ऑस्कर अवार्ड मिले, मैं उनको सम्मानित करता हूँ। मैं व्यक्तिगत रूप से ध्यान देता हूँ। जब मुझे पता लगा कि तीन महानुभावों को भारत रत्न दिया गया है, तो बिना समय गँवाए हुए, मुझे पता था कि कुछ लोग टिप्पणी कर सकते हैं कि इस आसन पर बैठ कर आप प्रधान मंत्री का ट्वीट पढ़ रहे हैं, तो मुझे लगा कि सभापति के रूप में मुझे यह जानकारी सदन से शेयर करनी चाहिए, क्योंकि सदन का हर सदस्य यह महसूस करेगा कि पूर्व प्रधान मंत्री, नरसिम्हा राव जी को भारत रत्न मिला है, डा. स्वामीनाथन को भारत रत्न मिला है, चौधरी चरण सिंह जी को भारत रत्न मिला है। अब क्या गुजरी होगी उस परिवार पर, क्या गुजरी होगी किसानों पर, गरीब पर, मजदूर पर, गाँव के अंदर कि जयंत चौधरी को बोलने नहीं दिया गया! उनके साथ अभद्र व्यवहार किया गया, अमानवीय तरीके से किया गया, इशारों से किया गया। मैंने यह आँखों से देखा है। मैं बहुत दुखी हूँ। And I am sure you will appreciate it. We must, in one voice, condemn it. व्यक्तिगत रूप से मैं इसकी इतनी भर्त्सना करता हूँ कि मेरे पास शब्द नहीं हैं। मैं आपसे भी अनुरोध करूँगा कि चिंतन कीजिए, मंथन कीजिए कि इस सदन की गिरावट की हद तक आ गए हैं हम, अब हम इसको और न गिरने दें। मान कर चलिए, इसका बहुत व्यापक असर होगा। खुशी का असर कम होता है, दुख बहुत लंबे समय तक पीड़ा देता है। आज के दिन क्या आवश्यकता थी! दो मिनट बोल लेते, बात खत्म थी। मुझे लिखित पढ़ना पड़ा, तो मुझे कहा जाता है कि पहले क्यों नहीं बताया। नियमों को देखेंगे नहीं; मेरे आचरण को, जो मैंने कई सप्ताहों से किया, दृष्टिगत नहीं रखेंगे और अचानक टीका-टिप्पणी करेंगे! मैं खरगे जी का बहुत आदर करता हूँ। उनका इतना लंबा राजनीतिक जीवन है, सादगी भरा जीवन है, पर मैं खून के घूँट पीता रहता हूँ कि वे आसन की गरिमा का ध्यान नहीं रखते। मैं इस चीज को हमेशा दूसरी दृष्टि से देखता हूँ, पर इसकी भी एक हद है। मैं इस आसन पर बैठा हूँ। जगदीप धनखड़ के साथ कुछ भी कीजिए, आपका विवेक है, लेकिन आसन को चुनौती देना, जोर से बोल कर चुनौती देना, यह किसी को भी शोभा नहीं देता, खास तौर से प्रतिपक्ष के नेता को। मैं हाथ जोड़ कर यह शब्द कहने के लिए आप सबसे माफी माँगता हूँ कि इस सदन की इस गिरावट पर मैं कोई अंकुश नहीं लगा पाया। ...(**व्यवधान**)... नहीं, कुछ नहीं। प्लीज़। ...(**व्यवधान**)...

SHORT DURATION DISCUSSIONS - *Contd.*

"Shree Ram Mandir ke Etihasic Nirman aur Pran Pratishta" (Historic construction of Shree Ram Temple and Pran Pratishta)

MR. CHAIRMAN: Now, Short Duration Discussion.

(MR. DEPUTY CHAIRMAN *in the Chair.*)

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Now, Short Duration Discussion. ...*(Interruptions)*... Notices have been received from the following Members to raise a discussion. ...*(Interruptions)*...

DR. K. KESHAVA RAO (Telangana): Sir, the House agrees with the Chairman. ...*(Interruptions)*... उन्होंने जो बात कही है, उन्होंने जो दुख एक्सप्रेस किया है, आज मॉर्निंग में जो हुआ है, तो वह total misunderstanding से हुआ है। चरण सिंह जी को भारत रत्न क्यों दिया गया, किसी ने चैलेंज नहीं किया है।

श्री उपसभापतिः धन्यवाद। अब इस विषय पर बहस नहीं होगी। Please. No, no. ...*(Interruptions)*...

DR. K. KESHAVA RAO: Sir, my apologies. ...*(Interruptions)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: No. माननीय चेयरमैन ने अपनी वेदना प्रकट की है, पूरा सदन उनके साथ है, हमें इस पर बात करनी चाहिए। ...(**व्यवधान**)... नहीं, बिल्कुल नहीं। ...(**व्यवधान**)... पुनः वही आचरण। ...(**व्यवधान**)...Now, hon. Chairman has called for Short Duration Discussion. ...*(Interruptions)*... Nothing is going on record, Dr. Keshava Rao. ...*(Interruptions)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Notices have been received from the following Members to raise a discussion on "Shree Ram Mandir Ke Etihasic Nirman aur Pran Pratishta" (Historic construction of Shree Ram Temple and Pran Pratishta), namely, Dr. Sudhanshu Trivedi, Dr. K. Laxman and Shri Rakesh Sinha. Now, Dr. Sudhanshu Trivedi.

डा. सुधांशु त्रिवेदी (उत्तर प्रदेश): माननीय उपसभापति महोदय, आज जब हम लोग इस कालखंड में खड़े हुए हैं, तब मुझे लगता है कि जब मैं किशोरावस्था में था और श्रीराम जन्मभूमि का आन्दोलन प्रारम्भ हुआ था, उस महान यज्ञ में, जिसमें करोड़ों लोगों ने कई पीढ़ियों तक अपनी आहूति दी, उसकी पूर्णाहूति देते हुए देखना अपने आप में एक बहुत सुखद अनुभव होता है।

महोदय, यह कालखंड इसलिए भी अधिक महत्वपूर्ण है कि यह भारत के अमृतकाल का ही कालखंड नहीं है, बल्कि श्रीराम मन्दिर के माध्यम से शताब्दियों से सोयी हुई भारत की चेतना के पुनः उठ कर अग्रसर होने और विश्व को नया संदेश देने का एक संधिकाल भी है। इसलिए मैं यह कह सकता हूँ कि मेरे मन में एक भाव आया कि यह ऐसा कालखंड था, जिसमें बहुत कुछ असम्भव लगने वाली चीज़ ने भी साकार रूप धारण किया है। मेरे मन में यह भाव आया कि मानो :

"अक्षर सभी पलट गए भारत के भाल के
साकार हुआ स्वप्न हर बला को टाल के
नये क्षितिज उभर रहे हैं अमृतकाल के
और दिव्य दर्शन हो रहे हैं श्रीराम लाल के।"

मान्यवर, भगवान राम उस भारत की 'स्व' की अनुभूति हैं, जो भारत की स्वतंत्रता के बाद निश्चित रूप से प्रकट होनी चाहिए थी, जो अनादि काल से भारत में उत्तर से दक्षिण तक - उत्तर में यदि गुरु गोबिन्द सिंह जी ने गुरुमुखी में 'रामावतार' लिखा, तो दक्षिण में तमिल में कम्बन ऋषि ने वही रामावतार 'रामावतारम्' नाम से ही लिखा। इसी प्रकार बंगला में कृत्तिवास ने लिखा, तो हिन्दी में तुलसीदास ने लिखा। तो उत्तर-दक्षिण, पूरब-पश्चिम से, सब तरफ 'भारत के प्राण' को अनुप्राणित करने वाला यह तत्व था, इसीलिए महात्मा गांधी ने भी जिस समय स्वतंत्रता आन्दोलन की शुरुआत की, तो अपना राजनैतिक दर्शन 'राम राज्य' रखा था, प्रतिदिन का भजन 'रघुपति राघव राजा राम' रखा था और अन्तिम शब्द 'हे राम' कहा था। परन्तु हे राम, मैं यह कहना चाहूँगा कि उन राम को भी प्राण प्रतिष्ठित करने में इतना संघर्ष करना पड़ा, जो भारत के समाज से लेकर आध्यात्म और मन तक विद्यमान थे, जिसे हम लोग उस आन्दोलन के समय कहते थे कि :

"यह तन प्रभु राम का, मन प्रभु राम का
तो हर क्षण बोलिए, जय श्रीराम की
आस प्रभु राम की, श्वास प्रभु राम की
तो प्रतिक्षण बोलिए, जय श्रीराम की।"

मगर आगे यह जो समस्या थी, तो हम कहते थे कि :

"शासन चलाये चाहे, सीने पर गोलियाँ
परवाह नहीं कीजिए, शरीर और प्राण की
आएँ आपदाएँ, विपदाएँ चाहे कितनी
बनाएँगे हम मन्दिर, सौगन्ध श्रीराम की।"

आपदाओं-विपदाओं को पार करते हुए वह सौगंध आज पूर्ण हुई, इसके लिए अनेकानेक लोगों ने बलिदान दिया - देवी दीन पांडे जी से लेकर, सरदार फकीर सिंह से लेकर, हजारों संतों से लेकर, कार सेवकों तक और कोठारी बंधुओं तक। परन्तु मैं एक बात कहना चाहूँगा, इस विषय पर मैं एक क्वोट करना चाहता हूँ। 2003 के नोबेल पुरस्कार विजेता वी.एस. नायपॉल ने भारत के बारे में एक किताब लिखी थी - 'India: A wounded civilization.' उन्होंने कहा कि भारत एक विचित्र देश है, जहाँ पर अपनी संस्कृति को आघात करने वाले विषय को पढ़ाया जाता है और आघात करने का प्रयास किया जाता है। इसीलिए उन्होंने 'Wounded Civilization' word कहा। मैं इसलिए कह रहा हूँ कि जो इतिहास में प्रत्यक्ष प्रमाण थे, उनको भी झुठलाने का प्रयास हुआ।

महोदय, मैं श्रीराम जन्मभूमि केस के सिर्फ दो उदाहरण बताना चाहता हूँ। जब मुकदमा चला, तो यह पूछा गया कि आप पिछली शताब्दियों के कोई पिछले उदाहरण दीजिए, तो विपरीत पक्ष के पास कोई उदाहरण नहीं थे। हमने foreign travelers के उदाहरण क्वोट किये। 1610 के आस-पास विलियम फिंच नामक एक ब्रिटिश ट्रेवलर आया था। उसने कहीं पर मस्जिद का उल्लेख नहीं किया, सिर्फ मन्दिर का उल्लेख किया। 1720-30 के आस-पास फ्रेंच ट्रेवलर जोसफ टेफेन्थलर आया था। वह कहता है कि वहाँ पर चबूतरा है, जिस पर वह एक पक्ष में मस्जिद की बात करता है और बताता है कि वहाँ रामनवमी पर लाखों की भीड़ लगती है। उसके बावजूद मैं एक मजेदार बात बताना चाहता हूँ। जब से ब्रिटिश डॉक्यूमेंट आया, तब जो पहली एफआईआर ऑफिशियली दर्ज हुई है, वह नवम्बर, 1858 में हुई है। फैजाबाद के थानेदार को रिपोर्ट दी गयी कि 25 निहंग सिखों ने आकर कब्जा कर लिया है, यज्ञ हवन किया है और मस्जिदे-जन्मस्थान के सब तरफ 'राम-राम' लिख दिया है। उपसभापति महोदय, आप जानते हैं कि सिगनेचर क्या है - मुतवल्ली, मस्जिदे-जन्मस्थान। अब बताइए कि पहली एफआईआर में खुद मुतवल्ली 'जन्मस्थान' लिख रहा है! उसके बाद भी इस विषय को इतना बढ़ाया गया और स्वतंत्रता के बाद, मैं एक बात कहना चाहता हूँ कि 22-23 दिसम्बर, 1949 की रात को, जब श्रीराम लला प्रकट हुए...। उसके बाद - यह ध्यान देने योग्य बात है, यह समुदायों के बीच के संघर्ष का विषय नहीं था, यह भारत के स्वाभिमान का विषय था। 12 साल टाइटल सूट की मियाद होती है। 12 साल तक मुस्लिम पक्ष, सुन्नी सेंट्रल वक्फ बोर्ड उसमें पैरोकार ही नहीं था। दिसम्बर, 1961 में, जब 12 साल पूरे होने में चार दिन रह गए थे, तब सुन्नी सेंट्रल वक्फ बोर्ड उसमें पैरोकार बना। क्यों? कुछ सेक्युलरिस्टों ने समझाया, कुछ लेफ्टिस्टों ने समझाया और इसका उल्लेख किया कि के. के. मोहम्मद साहब ने अपनी किताब में कहा है कि मुस्लिम समाज में एक बहुत बड़ा तबका यह मानता था कि हमें इस विषय में पड़ने की जरूरत नहीं है, परंतु राजनीति के चलते भारत के स्वाभिमान का विषय संघर्ष का प्रतीक बना। उसके बाद कोर्ट का निर्णय आया। संपूर्ण मर्यादाओं को पूर्ण करते हुए आज यह दिन आया। कई बार हम लोगों से कहा जाता है कि कोर्ट का निर्णय आया, तो इसमें आपने क्या किया? उनको मैं बताना चाहता हूँ कि हम जब-जब सत्ता में आए, 1991 में कल्याण सिंह जी की सरकार ने आकर 67 एकड़ भूमि का अधिग्रहण किया। उसके बाद, याद कीजिए, खुदाई पर रोक लगा दी गई थी। जब अटल जी की सरकार आई, तो नई टेक्नोलॉजी, ground-penetrating radar आ गई। उसके माध्यम से radar mapping की गई और वह कोर्ट में प्रस्तुत कर दी गई। मतलब ऑपरेशन पर रोक थी, अल्ट्रासाउंड पर तो नहीं थी, इसलिए अल्ट्रासाउंड करके दिखाया कि देखिए, अंदर क्या है? उसके बाद कोर्ट ने परमिशन दी और 2003 में उसकी खुदाई हुई और

उसके अंदर जो साक्ष्य निकले, उसी के आधार पर 30 सितम्बर, 2010 का Lucknow Bench of Allahabad High Court का जजमेंट आया, जिसने गर्भगृह श्री रामलला विराजमान को दिया। अब जब मोदी जी की सरकार आई, तो क्या अंतर था? विषय सुप्रीम कोर्ट में आ चुका था। सबसे बड़ी समस्या यह थी कि सुप्रीम कोर्ट में सारी की सारी प्रोसीडिंग सिर्फ इंग्लिश में होती है और वहाँ सारे documents, जो हजारों-हजार पेज के थे, उनको इंग्लिश में translate करना था with authentic documents, जिसमें अरबी-फारसी के भी थे, संस्कृत के भी थे, सबके थे। अगर 60 साल उसमें लगे थे, तो हो सकता है कि 50 साल इसमें भी लग जाते, क्योंकि बहुत-से लोग वकील का चोला ओढ़ कर खड़े होकर यह भी कहते थे कि इस जजमेंट को फलां साल के पीछे ले जाइए। मगर मोदी जी की सरकार ने आने के बाद 24x7 लगा कर सारे के सारे जो documents थे, उनका केवल दो-तीन वर्षों में translation किया और उसके बाद जाकर कोर्ट में अर्जी लगाई कि day-to-day hearing होनी चाहिए, क्योंकि हमारी सरकार तो उस प्रेरणा पर विचार करती थी :

"हनूमान तेहि परसा कर पुनि कीन्ह प्रनाम।
राम काजु कीन्हें बिनु मोहि कहाँ बिश्राम।।

फिर आपने देखा कि वह जजमेंट आया। यह भी एक सुखद संयोग देखिए, हमसे टीवी डिबेट में अकसर बहुत पूछा जाता था कि आ गये भाजपा वाले, कहते हैं रामलला हम आएँगे, मंदिर वहीं बनाएँगे, तारीख नहीं बताएँगे। महोदय, राम का मंदिर कोई इमारत नहीं थी, यह भारत की भव्यता का आगाज़ था और वह तारीख कोई तारीख नहीं थी, वह काल के परिवर्तन की गति थी। वह तारीख क्या थी? मैं बताना चाहता हूँ कि जब रामलला इस मंदिर में आए हैं, तो वह तारीख 4 करोड़ गरीबों के लिए घर लेकर आई है, 11 करोड़ लोगों के शौचालय लेकर आई है, 54 करोड़ लोगों के लिए जन-धन अकाउंट लेकर आई है, हर गाँव में बिजली, हर गाँव में सड़क लेकर आई है और इतना ही नहीं, हर राज्य में एयरपोर्ट लेकर आई है, समुद्र पर सबसे बड़ा सेतु, 'अटल सेतु' लेकर आई है और चिनाब नदी पर दुनिया का सबसे ऊँचा पुल, चिनाब का पुल लेकर आई है, highest FDI लेकर आई है; highest foreign-exchange reserves लेकर आई है; fastest-growing economy लेकर आई है और एक फिल्म का डायलॉग होता था, तारीख पर तारीख, तारीख पर तारीख वाले Indian Penal Code को तारीख का हिस्सा बना कर भारतीय न्याय संहिता लेकर आई है, जो तीन साल के अंदर सारी तारीखों को खत्म कर देगा। मगर महोदय, यह तारीख का राज थोड़ा और गहरा है, क्योंकि जब राम मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा होनी थी, तो तारीख वह होनी थी, जब स्वयं भारत के प्रधान मंत्री को इस हेतु जाना था, यानी तारीख उसका इंतजार कर रही थी कि एक ऐसा प्रधान मंत्री आएगा, जो उस दिन आकर प्राण-प्रतिष्ठा करेगा। वह प्रधान मंत्री भी कैसा होगा?...(**व्यवधान**)... जो पूरे राष्ट्र का सपोर्ट लेकर...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापतिः मैडम, कृपया आप बैठिए।...(**व्यवधान**)... Not allowed. ...*(Interruptions)*... आपको इजाजत नहीं है, nothing is going on record. Please. ...*(Interruptions)*... कृपया आप बोलें।...(**व्यवधान**)...

डा. सुधांशु त्रिवेदीः कृपया आप सुनिए। आप क्यों परेशान हो रहे हैं?

महोदय, प्रधान मंत्री भी कौन होगा? जो पूरे देश का जनादेश लेकर आया होगा और दूसरी बार भी लेकर आया होगा। जो अपने घोषणा पत्र में यह लिख कर लाया होगा कि हम राम मंदिर के निर्माण का कार्य प्रशस्त करेंगे, यानी 140 करोड़ लोगों के जनादेश के साथ वह तारीख आने वाली थी, जिस तारीख का इंतजार था। **...(व्यवधान)...**

महोदय, सिर्फ तारीख इतनी नहीं थी। अगर शास्त्री ढंग से प्राण-प्रतिष्ठा होनी थी, तो 11 दिन का उपवास रख कर तपस्या भी करनी थी। ऐसा भी प्रधान मंत्री आने वाला था, जो संकल्प लेकर 11 दिन की तपस्या करे। मैं एक और बात कहना चाहता हूँ कि हममें से कितने लोग 11 दिन नारियल का पानी पीकर तपस्या कर सकते हैं? **...(व्यवधान)...** महोदय, जो हर नवरात्र ऐसे रहता हो, उसी को तपस्या का वह अभ्यास होगा और मैं बताना चाहता हूँ कि स्वामी गोविंद गिरी जी, जो न्यास के कोषाध्यक्ष हैं, उन्होंने जब उपवास तुड़वाया, तो उन्होंने कहा कि मैं तार्किक व्यक्ति हूँ, मेरे मन में संदेह था, तो जब इनकी माता जी जीवित थीं, तब मैंने उनसे पूछा था, तो उन्होंने कहा था कि यह उपवास रखने का 40 वर्षों से अभ्यास है, इसलिए 11 दिन शासकीय कार्य करते हुए भी वे उपवास कर पाए। तारीख को ऐसे व्यक्ति की प्रतीक्षा थी। फिर, दक्षिण में जाकर, चाहे वह नासिक हो और फिर चाहे गुरुवायूर मंदिर हो अथवा रामेश्वरम में खड़े होकर प्रधान मंत्री जी जब 22 कुओं के जल से स्नान कर रहे थे, जो भारत के संपूर्ण क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करते हैं, तो धुर दक्षिण सिरे पर खड़े होकर यह संदेश था कि देखिए, ये राम हैं, जो पूरे उत्तर से दक्षिण तक घट-घट में व्याप्त हैं। उस तपस्या से प्रकट होने के बाद तारीख को उस प्रधान मंत्री की दरकार थी, क्योंकि राम का काज कौन कर सकता है? गोस्वामी जी 'हनुमान चालीसा' में लिख गए हैंः

"सब पर राम तपस्वी राजा, तिन के काज सकल तुम साजा।।"

अगर राम तपस्वी राजा थे, तो उनका कार्य करने के लिए तपस्वी प्रधान मंत्री भी होना चाहिए था और तारीख को इस तारीख का इंतजार था, यह राज समझने के लिए हम आपको समझाएंगे भी तो शायद आप नहीं समझ पाएंगे। इतना ही नहीं, इसमें महत्वपूर्ण बात यह थी कि सब कुछ शांति और सौहार्द से निपट गया। जब राम मंदिर का मुद्दा उठा था, तो कितनी प्रकार की घटनाएं होती थीं, लेकिन पूरे देश में जिस प्रकार का सौहार्दपूर्ण वातावरण रहा, उसके लिए हमें निश्चित रूप से सरकार और प्रधान मंत्री जी को धन्यवाद देना चाहिए।

महोदय, 1990-92 में भारत ही नहीं, बल्कि उसके अगल-बगल भी बहुत कुछ हुआ था। अबकी अगल-बगल में भी शांति बनी रही, यह तपस्वी प्रधान मंत्री का प्रताप था। इतना ही नहीं, अबू धाबी में भी मंदिर बनने जा रहा है। मुझे लगता है कि भारत के लिए 'अमृत काल' में सांस्कृतिक गौरव का इससे बेहतर काल नहीं आ सकता था कि राम मंदिर भी बन रहा है और अबू धाबी में भी मंदिर बन रहा है।

महोदय, मैं एक और बात कहना चाहता हूँ कि यह कोई हिंदू-मुस्लिम का विषय नहीं था, बल्कि यह भारत की जय और विजय का विषय था और उससे भी बढ़कर यह मूल्यों का विषय था। वे कौन से मूल्य थे? एक मूल्य वह, जिसमें भगवान राम उस मूल्य के प्रतीक बनते हैं जिसमें चार भाई हैं और पिता के एक वचन पर वन चले जाना, दूसरे भाई का जंगल जाना, तीसरे भाई का

खड़ाऊँ रखकर शासन करना, एक यह परंपरा थी। दूसरी बाबरी परंपरा थी, जिसमें भी चार भाई थे - शुजा, मुराद, दारा और औरंगजेब। उसमें एक ने तीन का कत्ल कर दिया, बुढ़ापे में बाप को जेल में डाल दिया और वह इतने पर भी संतुष्ट नहीं हुआ, बल्कि बड़े भाई का सिर काटकर थाली में रखकर जेल में बंद बाप के पास भेजा। चाहे आप किसी भी मत को मानने वाले हों, अपने घर में क्या देखना चाहते हैं, भाई की खड़ाऊँ या भाई का सिर? इन दो मूल्यों के अंतर का यह प्रतीक था, इसका केवल हिंदू-मुस्लिम से कोई संबंध नहीं था।

मान्यवर, मैं अपने विरोधियों को बताना चाहता हूँ कि उर्दू में भी एक रामायण लिखी गई है, जिसका नाम 'चकबस्त रामायण' है। उसमें इसी मूल्य को appreciate किया गया है कि जब भगवान राम राजा दशरथ से अनुमति लेकर जाते हैं, तो उस संदर्भ को उर्दू के प्रसिद्ध शायर, चकबस्त, जो कि लखनऊ के ही रहने वाले थे, उन्होंने लिखा हैः

"रुख़्सत हुए वो बाप से ले कर ख़ुदा का नाम,
राह-ए-वफ़ा की मंज़िलें,अव्वल हुई तमाम।"

यानी, उनको तो यह दिखा कि राह-ए-वफा की कौन सी मंजिलें हैं, जो अव्वल हो रही हैं, मगर मैं क्या बताऊँ, महोदय! मैं एक फैक्ट बताना चाहता हूँ कि 22-23 दिसंबर, 1949 की रात को जब श्री रामलला प्रकट हुए तो सबसे पहले वह रोशनी जिसने देखी थी, वह यूपी गवर्नमेंट का एक सिपाही था, जिसका नाम अब्दुल बरकत था। उसने बाकायदा मजिस्ट्रेट के सामने यह बयान दिया है कि रात में उसको दिव्य रोशनी दिखी और जब वह दिव्य रोशनी हटी तो वहां पर श्री रामलला विराजमान थे। अब्दुल बरकत को रोशनी 1949 में दिख गई, मगर कुछ सियासत वालों को रोशनी 2024 में भी नहीं दिख रही है।

महोदय, मैं आपको एक और बात बताना चाहता हूँ। बाबरी पक्ष के पैरोकार इकबाल अंसारी थे। यह उदारता देखिए कि सबको बुलाया गया। ट्रस्ट के द्वारा विरोध करने वालों को बुलाया गया, गोली चलाने वालों को बुलाया गया और इकबाल अंसारी को भी बुलाया गया तथा इकबाल अंसारी प्राण-प्रतिष्ठा में आ गए। उनका इकबाल तो बुलंद हो गया, मगर इन लोगों का इकबाल जमींदोज़ हो गया। On a lighter note, मैं यह भी बताना चाहता हूँ कि उसका एक कारण है और इसको कोई पर्सनली न ले। महोदय, यह कहा जाता है कि हमारे यहां राम का तत्व या ईश्वर का तत्व वह नहीं समझ पाता है, जो कामी, क्रोधी, लोभी और खलगामी हो और राजनीति में वह नहीं समझ पाता, जो सेकुलर और वामी हो।

महोदय, अब मैं यह बताना चाहता हूँ कि यह मंदिर किस चीज़ का प्रतीक है। कई लोग एकाध कोई शब्द लेकर, बगैर पढ़े हुए, बगैर उस भाषा को जाने हुए नकारात्मक बात कहने लगते हैं, तो मैं बताना चाहता हूँ कि कौन मेरा भक्त है, भगवान राम ने इसका बाकायदा उदाहरण दिया। उन्होंने लिखा हैः

"जाति पाँति कुल धर्म बड़ाई।
धन बल परिजन गुन चतुराई।"

इन 10 चीज़ों से मैं नहीं मिलता। मैं कैसे मिलता हूँ, भक्ति से मिलता हूँ। किसी के पास ये सारी 10 चीज़ें हों और भक्ति न हो, तो उन्होंने कहा -

'भगति हीन नर सोहइ कैसा।
बिनु जल बारिद देखिअ जैसा।।'

अर्थात् सब कुछ हो, यानी जाति-पांति कुल धर्म बढ़ाई हो, लेकिन भक्ति न हो, तो ऐसा होगा, जैसे बादल हो और उसमें पानी न हो। इसलिए भगवान ने इस बात का संदेश दिया। मैं एक विषय और कहना चाहता हूं। जब राम मंदिर का निर्माण हो रहा था, तब कहा जाता था कि वैज्ञानिक प्रमाण दीजिए। मैं सिर्फ एक बिंदु विज्ञान के बारे में और बताना चाहता हूं। यह विशुद्ध विज्ञान है, क्योंकि अगर आपने रामचरितमानस के शुरुआती श्लोक पढ़े हों, तो उसमें बहुत साफ लिखा है,

'सीताराम गुणग्राम पुण्यारण्य विहारिणौ,
वन्दे विशुद्ध विज्ञानौ कवीश्वर, कपीश्वरौ।'

अर्थात् विशुद्ध विज्ञान महर्षि वाल्मीकि ने लिखा और विज्ञान क्या है! पूछा गया था कि भगवान हुए कब, यह तो बताइए, यहां हुए कि नहीं, यह बताइए! आप यह बताइए कि हम आज समय कहते हैं, उनका exact time लिखा है, जैसे आज दिल्ली में टाइम कुछ और है, लंदन में टाइम कुछ और है, तो Greenwich Mean Time (GMT) बताया गया। अगर आपसे पूछा जाए कि टाइम का absolute measuring parameter क्या है, which is equally applicable on Earth, Moon, solar system at any point in the space. It is only the relative positions of planet. भगवान राम का वह exact relative positions of planet, जो आईंस्टीन की थ्योरी का Fourth Dimension कहा जा सकता है, वह लिखा है कि मेष राशि में सूर्य था, मकर राशि में मंगल था, तुला राशि में शनि था, मीन राशि में शुक्र था और जब NASA ने अपने Planetarium Gold Software में डाला, तो 5,114 BC की डेट निकल आई, क्या इससे ज्यादा किसी को सबूत चाहिए! विज्ञान का वह सबूत मिला और इतना ही नहीं, मैं बताना चाहता हूं, जिन लोगों ने अगर पढ़ा हो, तो लिखा है कि भगवान राम के जन्म के समय चैत्र मास के समय शरद ऋतु थी, अंगद बताते हैं कि अश्विनी मास, यानी आज के अक्टूबर के समय वसंत ऋतु थी और इतना ही नहीं, कहा गया कि जब किष्किंधा से भगवान राम निकलते हैं, तो मूल नक्षत्र से धूमकेतु टकराया था। जब astronomers ने इसकी गणना की, तो वह ठीक डबल हो जाता है, 14 हज़ार साल पीछे आता है। इसका मतलब, प्रमाण देखने हैं, तो प्रमाण ज़मीन के नीचे से भी निकले, शाही फ़रमानों से भी निकले और आसमान से भी निकले - समस्त मर्यादाओं को पूर्ण करते हुए इस विषय के पक्ष में ऊपर आए। मैं एक बात और कह दूं, कभी कहा जाता था कि महर्षि वाल्मीकि ने भगवान राम के पैदा होने से पहले रामायण लिख दी थी, कभी कहा जाता था कि भविष्य में जाकर लिखी। यह कहा जाता था कि यह बकवास है, ऐसा कैसे हो सकता है! महाभारत के बारे में कहा जाता है कि वेद व्यास ने भूतकाल में जाकर लिखी थी। कहते थे कि ऐसा कैसे हो सकता है। मैं पूछना चाहता हूं, वर्ष 1916 में Einstein की Theory of Relativity देने के बाद अब time travel forward, time

travel backward बकवास है क्या! अगर किसी ने साइंस नहीं पढ़ी है, तो उसे समझना चाहिए। मगर मैं यह नहीं कहना चाहता हूं। मैं कहना चाहता हूं कि हमारे ऋषि त्रिकाल दर्शी थे और यह टाइम ट्रेवल तो बहुत छोटी बात थी, जो अब धीरे-धीरे लोगों को समझ में आ रही है। मैं एक विषय और कहना चाहता हूं कि हम सब ने भगवान राम के मंदिर को देखा, वहां दूसरा सबसे बड़ा मंदिर हनुमानगढ़ी का है। आपने इस देश में हनुमान जी के सैकड़ों-हजारों मंदिर देखे होंगे, क्या कभी लव-कुश का मंदिर देखा है - नहीं, क्योंकि हमारे यहां पुत्र का महत्व नहीं है, शिष्य का महत्व है, भक्त का महत्व है, हमारे यहां biological succession का महत्व नहीं है, spiritual succession का महत्व है। इसीलिए द्रोणाचार्य के बेटे का स्थान ऊंचा नहीं है, शिष्य का स्थान ऊंचा है, इसीलिए हम हर जगह गुरु-शिष्य परम्परा की बात करते हैं, पिता-पुत्र परम्परा नहीं होती। भगवान राम का चरित्र इस बात का उदाहरण देता है इसीलिए हर जगह आपको हनुमान जी के मंदिर मिलेंगे, वे भी राम से ज़्यादा मिलेंगे। अंत में मैं यह कहना चाहता हूं कि एक बार एक डिबेट में वे कहने लगे कि 'You are talking about the Ram Temple, how does Ram Temple fit in the 21st Century?' Emerging India aspires to become a technologically advanced and become the economic super power with the youngest population. Where does the Ram Mandir fit in that?' मैंने कहा कि सुनिये महोदय, हम 21वीं सदी में भारत को सिर्फ economic, intellectual या military super power नहीं बनाना चाहते हैं, हम वर्ल्ड लीडर बनाना चाहते हैं और जब वर्ल्ड लीडर बनाना चाहते हैं, तो it should symbolize the certain set of values which will inspire the world. अगर सारे श्रेष्ठतम मानवीय मूल्यों का प्रतीक कोई एक होगा, तो वह भगवान राम का मंदिर होगा, जो विश्व के श्रेष्ठतम मानवीय मूल्यों का प्रतीक होगा, वह कैसे होगा! मैं आधुनिक geo-politics बताना चाहता हूं कि आज कोई एक देश किसी दूसरे देश पर अटैक कर रहा है, रशिया-यूक्रेन की लड़ाई चल रही है, चाइना की ताइवान के साथ प्रॉब्लम चल रही है, ईराक का भी ऐसा ही है। डिप्लोमेसी में क्या है! पहला है, annexation - दूसरे देश को मिला लो, दूसरा है subjugation - वहां अपने deputy को अप्वाइंट कर दो और तीसरा है domination - उसके साथ संधि साइन कर लो। क्या भगवान राम ने लंका को जीतने के बाद annexation किया - नहीं। क्या वहां कोई अपना deputy बनाया, यानी subjugation किया - नहीं। क्या कोई treaty sign कराई, domination किया - नहीं। मैं कह सकता हूं कि आज के इस geo-politics world में, जब clash of civilization कहा जाता है, तो मूल्यों का प्रतीक वह राम मंदिर दिखेगा, जो पूरी दुनिया को बताएगा कि peaceful co-existence कैसे हो सकता है, वह भी बगैर एक-दूसरे से लड़े हुए। इसलिए मैं कह सकता हूं कि 21वीं सदी का महान भारत बगैर राम मंदिर के संभव ही नहीं है। अंत में मैं सिर्फ यह कहना चाहता हूं कि एक नया इतिहास बना है। यह हमारी सरकार और माननीय प्रधान मंत्री जी की उस दृढ़ इच्छा शक्ति का प्रतीक है, जिसके लिए कहा जाता था कि 370 कभी नहीं हटेगी, राम मंदिर कभी नहीं बन सकता। मगर ये वे लोग कहते हैं, जो फूलों के हार पहनते हैं। हमारे प्रधान मंत्री जी अंगारों के हार पहनते हैं। जो अंगारों के हार पहनते हैं, वे इतिहास को बदलने में निश्चित रूप से सफल होते हैं। इसलिए मैं अंत में अपनी सरकार को बधाई देते हुए यह कहना चाहता हूं कि हमने साफ कहा था कि हम राम मंदिर नहीं बनवा रहे हैं, श्री राम जन्म भूमि न्यास ट्रस्ट मंदिर बनवा रहा है, हम सिर्फ मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं, लेकिन दूसरों

ने कहा था कि हम कुछ और बनवायेंगे। प्रधान मंत्री जी की तरफ से हम सिर्फ उनके लिए कहना चाहते हैं कि

"अंगार हार उनका, जिनकी सुन हांक समय रुक जाता है
आदेश जिधर कर देते हैं, इतिहास उधर झुक जाता है।"

श्री प्रमोद तिवारी (राजस्थान)**:** उपसभापति जी, एक बहुत ही महत्वपूर्ण विषय पर बोलने के लिए मेरे नेता, मेरी पार्टी ने मुझे टाइम दिया, मैं उनके प्रति आभार व्यक्त करता हूं। मान्यवर, इस मुद्दे पर मैं यह स्पष्ट करना चाहता हूं कि मैं उत्तर प्रदेश का रहने वाला हूं। उत्तर प्रदेश में भी अवध का रहने वाला हूं और अवध में भी फैजाबाद तत्कालीन, अब अयोध्या का रहने वाला हूं। मैंने इसे बहुत करीब से देखा है। मैं उस समय हर वक्त विधान सभा का सदस्य था। मैंने बहुत करीब से इसके उतार-चढ़ाव देखे हैं। मैं सबसे पहले बिना किसी लाग-लपेट के कहना चाहता हूं कि मैं सर्वोच्च न्यायालय के उस निर्णय का सम्मान करता हूं, जिस सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय से राम मंदिर का मार्ग प्रशस्त हुआ और राम मंदिर बना, तो मैं उस न्यायालय के निर्णय का स्वागत करता हूं। आप वक्त देंगे, तो बता दूंगा। इस न्यायालय से ही राम मंदिर का निर्माण हुआ, वरना बहुत से ऐसे लोग थे, जो चाहते थे कि यह मुद्दा जिंदा रहे, खून-खराबा होता रहे और उसमें वे अपने सत्ता के गलियारों में सत्ता बनाते रहें। सच्चाई यह है। यह मैंने बहुत करीब से देखा है। मैं इसका उदाहरण भी दूंगा। मैं विधान सभा का सदस्य था। हमारे मुख्य मंत्री, आदर के साथ जिनका नाम लेता हूं, कल्याण सिंह जी, जब उनकी विधान सभा बन गई और वे मुख्य मंत्री बन गए, तो मैंने उनसे पूछा कि आप तो कहते थे - उस समय बड़ी श्रद्धा के साथ एक नारा था - 'रामलला हम आएंगे, मंदिर वहीं बनाएंगे' - मैंने उनसे कहा कि कल्याण सिंह जी, आप तो पहुंच गए, तो अब मंदिर कब बनेगा? उन्होंने कहा कि जब केंद्र की सरकार बन जाएगी। जब केंद्र सरकार बन गई, तो मैंने उनसे पूछा, तो वे बोले कि बाद में बताएंगे। यह सब विधान सभा की कार्रवाई में अंकित है, इसलिए इधर-उधर नहीं किया जा सकता था। सर, सच्चाई तो यह है, मैं दृढ़ता से कहता हूं कि अगर राम मंदिर बना है, तो सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय से बना है, जिसका मैं सम्मान करता हूं। मैं ही सम्मान नहीं करता, बल्कि 140 करोड़ भारतवासी, चाहे जिस जाति, धर्म के हों, सब सम्मान करते हैं कि राम मंदिर का भव्य निर्माण सुप्रीम कोर्ट के निर्णय की वजह से हुआ और उसका मैं सम्मान करता हूं।

महोदय, मैं भगवान राम का पुजारी हूं, शुरू में कह दूं। हिंदू हूं, बताना पड़ता है, क्योंकि मैं कॉलम लिखता हूं, सनातन भी हूं, सम्मान और गर्व से कहता हूं। ...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापतिः प्लीज़, प्रमोद जी बोलिए।

श्री प्रमोद तिवारीः मान्यवर, ये कह रहे हैं कि ब्राह्मण भी हूं, तो हूं और गर्व करता हूं। पर मैं उन लोगों में हूं, जो भगवान राम के प्रति, जैसा हमारे नेता प्रतिपक्ष कह रहे हैं कि आस्था भी रखता हूं। उनकी पूजा करता हूं, उनकी आराधना करता हूं, उनके बताए सिद्धांत पर चलता हूं, जो मर्यादा पुरुषोत्तम ने रखे हैं। मैं भगवान राम का व्यापारी नहीं हूं। जो लोग भगवान राम का व्यापार करते हैं, राजनीतिकरण करते हैं, मैं वह नहीं हूं। भगवान राम मेरे लिए आस्था का विषय हैं और मैं उनके ऊपर आस्था प्रदर्शित करना चाहता हूं।

4.00 P.M.

मान्यवर, मैं एक बात जरूर कहना चाहूंगा कि यह भारत देश, जिसके 140 करोड़ लोगों ने स्वागत किया है, उनमें हर वर्ग, हर धर्म और जाति ने त्याग किया है, बलिदान दिया है, कुर्बानियां दी हैं, इनमें वे लोग बहुत नहीं हैं, जिन्होंने अंग्रेजों की चापलूसी और मुखबरी की हो, आज वे भगवान राम को मानते हैं। मान्यवर, मैं तो बड़ी विनम्रता से कह रहा हूं और आप से ज्यादा मुझे कौन समझता है। मान्यवर, मैं यह कहना चाहता हूं कि अगर भगवान राम का सबसे बड़ा पुजारी कोई है, राजनीति में, नहीं भी रहा, दिशा भी दिखाता रहा, तो राम का सच्चा पुजारी महात्मा गांधी थे। आज महात्मा गांधी को कौन मानता है, ये जग-जाहिर है, पर भगवान राम के सबसे बड़े पुजारी गांधी का हत्यारा गोडसे की पूजा करने वाला कौन है, यह भी दुनिया जानती है। आज उन सिद्धांतों पर लोग चल रहे हैं। मेरी एक चिंता है और मुझे उसका निवारण लेना है, इसलिए मैं कह रहा हूं। मान्यवर, अगर राजनीति से नहीं जोड़ना था, तो मैं जितना पढ़ा-लिखा हूं, समझदार हूं, मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा तब होती है, जब मंदिर पूर्ण हो जाता है, पूर्णता को प्राप्त कर लेता है, मंदिर बन जाता है, उसके कई व्यावहारिक कारण हैं। एक मंजिल बना दो, दूसरी मंजिल पर जाएंगे, फिर मजदूर बनाएंगे, उनके चरण वहां पर होंगे, जहां पर भगवान स्थापित होंगे। मुझे सिर्फ दुख है कि मंदिर का अपूर्ण स्थिति में स्वागत किया गया। इसको ट्रस्ट भी कह रहा है। मान्यवर, इसकी जल्दी क्या थी, क्या कोई कारण है? अगर कारण है, तो उधर से जबाव आ जाएगा। लेकिन जो मैं कारण समझता हूं, चूंकि मैंने कहा कि मैं अवध का रहने वाला हूं, मैंने लोगों से पूछा कि यह मंदिर कब बनकर तैयार होगा, तो लोगों ने बताया कि नवम्बर, दिसम्बर तक हो जाएगा। नवम्बर, दिसम्बर तक तैयार होने की हम भी कल्पना कर रहे थे, एक दिन समाचार आया कि यह 22 जनवरी को होगा। मैं अचंभित हो गया कि सब कुछ मुमकिन है, अगर कोई है। शायद कोई तकनीक आई होगी कि जो भव्य राम मंदिर का नक्शा दिखाया जा रहा है, सर, मैं सबूत में भगवान राम के भव्य मंदिर का नक्शा आपको दिखाता हूं। क्या वह पूर्ण है? क्या अपूर्ण मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा करके पूरे भारत देश को खतरे में नहीं डाला गया? अगर हिंदू धर्म को मानते हैं, लोग कहते हैं कि अपूर्ण मंदिर की पूजा कर लो, तो वह पूरे समाज के लिए पीड़ादायक होता है, दुखदायक होता है। मैं इसे इससे नहीं जोड़ता कि जिस दिन उन्होंने किया, उसी दिन दिल्ली में भूकम्प आया था। मैं उसको इससे नहीं जोड़ता हूं। फिर भी, लोग तो कहते ही हैं। मान्यवर, मैं एक बात जरूर कहना चाहता हूं कि हिंदू होने के नाते हम सब मंदिर में नहीं जा पाते, तो बाहर से ध्वजा को प्रणाम कर लेते हैं। जो ध्वजा होती है, आप भी करते होंगे। लेकिन इस मंदिर की ध्वजा कहां है? मान्यवर, ध्वजा इसलिए नहीं है, क्योंकि कलश होता, तो ध्वजा होती, बिना कलश के निर्माण कर लिया। मैंने कुछ गांव वालों से पूछा, जो ज्यादा पढ़े-लिखे नहीं थे। भैया, काहे इस अपूर्ण मंदिर का उद्घाटन हुआ - यह मैं अवध की बात कर रहा हूं, तो मुझे जबाव यह दिया गया। मान्यवर, मैंने जब पूछा, तो उन लोगों ने बताया कि भैया, तुमको इतना भी नहीं मालूम कि अगर नवम्बर में बनता, तो चुनाव तो फरवरी-मार्च-अप्रैल में होने जा रहा है, इसलिए भगवान राम की मर्यादा रहे या न रहे, चुनाव की नाव पार हो जाए, इसलिए 22 जनवरी को इसका उद्घाटन किया गया, प्राण प्रतिष्ठा की गई।

मान्यवर, मैंने आपसे कहा है कि मैं अयोध्या का रहने वाला हूं और प्रदेश सरकार में पर्यटन मंत्री रहा हूं। मैंने पर्यटन मंत्री के रूप में राम कथा पार्क का, राम की पैड़ी का निर्माण सरकार की

नीति के अनुसार किया था, जैसा हमने तमाम हिंदू-मुस्लिम-सिख-ईसाई धर्मों के लिए किया था पर्यटन मंत्री के रूप में। मान्यवर, मैंने सैकड़ों बार जाकर मंदिर के दर्शन किए हैं। जहां पर मूर्ति रखी थी, वहां पर जाकर दर्शन किए थे। वाह रे भगवान राम के पुजारियो, सपने इतने दिखाए और मंदिर बनवाया ले देकर सैकड़ों मीटर से दूर, राम जन्म भूमि पर नहीं बनवाया। यह मैं आपके माध्यम से सदन की कार्यवाही में लाना चाहता हूं। आप एक टीम बना दीजिए, सदस्यों की टीम चली जाए और मौका देखकर आ जाए कि राम मंदिर जहां पर बना है, वह जन्म स्थान नहीं, जन्म स्थान से दूर बना है। उसमें ऑल पार्टी के लोग रहें। मान्यवर, चलिए यह भी हो गया। मैं आपसे यह कहना चाहता हूं कि बड़ी चर्चा हो रही है कि जैसे वहाँ पर पहली बार हवाई जहाज गया - निस्संदेह अंतरराष्ट्रीय, राष्ट्रीय हवाई अड्डे का विकास हुआ, पर मैं बताना चाहता हूं कि मैंने नागरिक उड्डयन मंत्री के रूप में अयोध्या में पहला हवाई जहाज अपना उतारा था - जिसको ये विस्तार में कह रहे हैं। लेकिन हमारा विज़न था कि यह सभी जगह पर होना चाहिए, इसीलिए देवा शरीफ में लखनऊ का किया, अन्य कई जगहों पर किया।

मान्यवर, मैं आपसे बहुत ही विनम्रता के साथ एक और बात कहना चाहता हूं कि इसमें जो बार-बार भगवान राम की मर्यादा भंग की जा रही है, यह कार्यवाही क्यों हो रही है? आज के बाद कोई कार्यवाही नहीं होगी, क्योंकि उसके बाद चुनाव होगा। आप समझदार हैं, आप सब कुछ समझ रहे हैं, पर बोल नहीं रहे हैं। यह इसलिए है कि आपको बोलना नहीं चाहिए, पर मैं बोल सकता हूं, इसलिए बोल रहा हूं। आज का, चुनाव के पहले का अखिरी एजेंडा क्या है? यह राम मंदिर है। जो लोग राजनीतिकरण कर रहे हैं, मैं उनके लिए मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम से एक ही विनती करता हूं कि जिन्होंने पूजा की है - उपसभापति जी, हमारा टाइम है, मेरी पार्टी का टाइम है।

श्री उपसभापतिः आपकी पार्टी का टाइम खत्म हो रहा है।

श्री प्रमोद तिवारीः मान्यवर, मैं सिर्फ इतना कहना चाहता हूं कि हे, मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम, उन गोडसे के पुजारियों को माफ कर देना, जिन्होंने गाँधी की हत्या की है। सर, मैं अभी और बोलूंगा।

श्री उपसभापतिः आपका समय पूर्ण हो गया है, आपकी पार्टी के दूसरे वक्ता का समय चला जाएगा।

श्री प्रमोद तिवारी : मेरा समय तो अब शुरू होगा, 2024 के बाद।

मान्यवर, मैं आपसे विनम्रतापूर्वक एक और बात कहना चाहता हूं। राम मंदिर पर ऐसा भ्रम पैदा किया कि लोग वहाँ न जाएँ। 22 जनवरी को भी बहुत से लोग राम मंदिर गए। मैं तो कई बार गया हूं, जाता भी रहूंगा, किसी को रोका भी नहीं गया, लेकिन एक भ्रम फैला दिया गया।

महोदय, मैं एक और चीज़ कहना चाह रहा था। मैं यह हिंदू होने के नाते और वह भी अवध का हिंदू होने के नाते कह रहा हूं कि जब उसकी पूजा ही करनी थी, प्राण प्रतिष्ठा ही करनी थी, तो

वह काम पुरोहित करते, पुजारी करते, वे लोग वहाँ क्यों पहुँच गए, जिनका दूरदराज तक वास्ता नहीं था?

महोदय, मैं एक बात और कहूंगा, इसे कोई अपने ऊपर न ले, मैं किसी का नाम भी नहीं ले रहा हूं कि ब्राह्मण होने के नाते जितना मैं विधि विधान से जानता हूं, उतना बता रहा हूं कि जब शिलान्यास हुआ था, तब दीक्षित जी ने इसलिए किया था, क्योंकि उनकी पत्नी उनके साथ थीं, वहाँ पर और किसी की पत्नी नहीं थी। यहाँ भगवान राम, जिनका मंदिर बना है, जिनकी हम पूजा कर रहे हैं, उन्होंने भी जब यज्ञ किया था, तो माँ सीता की प्रतिमा बगल में बनवाकर रखी थी। मान्यवर, हम सीता को ढूँढ़ते रह गए, लेकिन हमें कहीं भी सीता दिखाई नहीं दीं। मैं सिर्फ इतना ही कहना चाहता हूं कि आपकी नीयत और नीति, दोनों ही खराब हैं। सुप्रीम कोर्ट ने जो फैसला दिया, मैं उसका सम्मान करता हूं, लेकिन आपने जो बार-बार मर्यादा भंग की है, दुखी मन से उसकी निंदा भी करता हूं। आपने चुनाव के लिए भगवान राम को मत पेटी पर रख दिया और मैं इसकी भर्त्सना करता हूं, निंदा करता हूं। आप नवंबर, दिसंबर में पूरा मंदिर बन जाने देते, तो अच्छा होता।

श्री उपसभापतिः प्रमोद जी, आपकी पार्टी से एक और वक्ता हैं। मैं आपको बताना चाहता हूं कि उनका समय कम हो रहा है।

श्री प्रमोद तिवारीः श्री उपसभापति, मुझे उनकी चिंता है। मैं पार्टी का डिप्टी लीडर हूं, मुझे उनकी चिंता है और मैं आपसे आग्रह करूंगा कि आप उनको भी कम से कम 15 मिनट बोलने दें।

श्री उपसभापतिः प्रमोद जी, यह मेरे हाथ में नहीं है। आप जानते हैं कि समय पहले से तय है।

श्री प्रमोद तिवारीः आपके हाथ में बहुत कुछ है, आप बस हिम्मत कीजिए। मैं आपकी बात समझ रहा हूं, इसलिए मैं आपसे आखिरी बात यह कहना चाहता हूं कि इधर जो बैठे हैं, ये भगवान राम के पुजारी हैं और जो उधर बैठे हैं, वे भगवान राम के व्यापारी हैं। मान्यवर, मैं बहुत स्पष्ट रूप से कहना चाहता हूं ..(**व्यवधान**).. हरनाथ जी, आप जाने वाले हैं, इसलिए बैठ जाइए। मैं यह भी कहना चाहता हूं कि हम भगवान राम की मर्यादा की रक्षा करने के लिए प्राण दे सकते हैं, लेकिन ये वे लोग हैं, जो अपने राजनैतिक स्वार्थ के लिए प्राण लेते हैं, जबकि हम प्राण देते हैं। हमारी पार्टी वह पार्टी है, जो राष्ट्र के लिए इंदिरा गाँधी जी, राजीव गाँधी जी का बलिदान देती है, लेकिन ये वे लोग हैं, जो महात्मा गाँधी का बलिदान लेते हैं। ये उस गोडसे के पुजारी हैं। मैं इन्हीं शब्दों के साथ एक और बात कहकर समाप्त कर दूंगा। ..(**व्यवधान**)..आप बैठ जाइए। भगवान राम को निजाम-ए-मुस्तफा भी कहा जाता है। भगवान राम को सभी मानते हैं। इनको इतनी सद्बुद्धि दे दीजिए कि ये भगवान राम को वाद-विवाद का विषय न बनाएं, विवादित न बनाएं, उस धर्म स्थली को धर्म स्थली रहने दें, उस धर्म स्थली को राजनैतिक स्थली न बनाएं। हम इसीलिए 22 जनवरी को वहाँ नहीं गए थे।

माननीय उपसभापति जी, इन्हीं शब्दों के साथ मैं बहुत विनम्रता से कहना चाहता हूं कि आपने मुझे यहाँ बोलने का अवसर दिया है ,इसके लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री उपसभापतिः प्रमोद तिवारी जी, जैसा आपने कहा, आपने जो अधिक समय तक बोला है, उसका समय आपकी पार्टी से जा रहा है, इसमें मेरे हाथ में कुछ नहीं है। डा. अमर पटनायक, आप बोलिए।

डा. अमर पटनायक (ओडिशा)**:** सर, आज का जो डिस्कशन प्वाइंट है - श्रीराम मंदिर का ऐतिहासिक निर्माण और प्राण प्रतिष्ठा, इसका हम वेलकम करते हैं। Everyone would have seen, on the day of *Pran Pratishthha*, hon. Chief Minister of Odisha, with folded hands, praying before Lord Rama and enjoying the spiritual content of the entire ceremony. In this context, I would like to bring to the information of this House that we have Lord Sri Jagannath at Puri. He is the deity of the entire country, definitely, of Odisha. History has it that he was a tribal deity, adorned by the *bhils* and the suburb people as a symbol of Narayana. Another legend claimed to be Nilamadhaba. He is also the God of the Jains. He symbolizes the cultural integrity of India, not just of Odisha.

Now, on 17th of January, 2023, under a Scheme, called, Augmentation of Basic Amenities and Development of Heritage and Architecture, the ABADHA Scheme, the Government of Odisha, under the guidance of Shri Naveen Patnaik, started, what is called, the Sri Mandir Parikrama Project. What had not been done for 700 years, was completed in a record time of three years, starting from 2021. Again, I wish to inform the House that Odisha is the only State which has a Heritage Cabinet. Hon. Chief Minister of Odisha is committed to recapture the glory of all heritage sites, in particular, making Puri as the International Cultural Heritage Centre, a Centre where people and devotees of Lord Jagannath from all the world would come over there. As a part of the project, the entire idea has been to increase the spiritual connect between the devotee and the Lord Prabhu Jagannath. What has been achieved in this process is to allow the pilgrims to have the basic amenities, and once they have the basic amenities, they will be able to enjoy all the components of the temple in full glory. For example, for many years, the people who have visited Puri would not have seen the Meghnath Wall, the Wall that surrounds the temple. I take this opportunity to give this *nyota* to you and to all the Members who are present here, who are watching this, to come and see Puri in its current splendour, in its current grandeur. You will see the Meghnath Temple, you can see the flag, you can see the deities, you can sit in a place and meditate. This was not possible earlier. All this has been possible because of the spiritual monk in politics, that is, our Chief Minister, Shri Naveen Patnaik. It is not just Puri which has been transformed, it is even Lingaraj Temple in Bhubaneswar, which is one of the oldest temples of Lord Shiva; in fact, it is older than Puri. This is also undergoing transformation. This entire process is happening under

a scheme, under the direction of the Heritage Cabinet of Odisha, which, I said, is probably nowhere in the country. Why I say this is because the spiritual content in any political sphere has to be seen as a service to the people. As *Prabhu* Jagannath says to his *bhakt* that he is always available to his devotees, 'I am there for the devotees; I would want his welfare', keeping that in mind, our C.M. went ahead with this particular exercise and this is happening in all the important temples where Gods and Goddesses are there in Odisha, whether it is in the West, whether it is in the East, whether it is in the North, whether it is in the South, whether it is in Mayurbhanj, whether it is in Kalahandi, whether it is in Sambalpur or whether it is in Bhubaneswar or in Puri. Therefore, while I support this discussion, I would once again welcome everyone to visit Puri and have a *darshan* of the Lord of the Universe, *Mahaprabhu* Jagannath. Thank you so much, Sir.

डा. सोनल मानसिंह (नामनिर्देशित): मैं यह कहना चाहती हूँ कि ...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Please take your seat. I am going as per the list.

डा. सोनल मानसिंह: सर, माननीय प्रमोद तिवारी जी ने कहा कि वहाँ सीता माता नहीं थीं। सीता माता भूदेवी हैं और भू के ऊपर यह राम मंदिर बना है। इसलिए सीता माता वहाँ बिल्कुल थीं, उनको दिखीं नहीं, वह अलग बात है, लेकिन हम सबको दिखीं।

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Now, Dr. K. Keshava Rao.

DR. K. KESHAVA RAO (Telangana): Please, lest I am misunderstood, let me make it very clear, क्योंकि लक्ष्मण साहब मेरे भाई हैं, वे यह विषय लाए हैं, मैं उनको बता रहा हूँ। Unnecessarily, we have brought Ram into political controversy now. Everybody loves Him. Everybody has Ram in his heart. Everybody had Ram in his heart before 22nd January also. Everything was going on well. आपके भद्राचलम में भी यह है, आप वहाँ जाकर देखिए, लेकिन आज हम लोग इसके ऊपर डिस्कशन कर रहे हैं। Why is there a need for discussion under Rule 176? मैं अपने भाई से पूछता हूँ कि इसमें urgent public importance क्या थी? Urgent public importance, controversy लाने के लिए किया गया। दो त्रिवेणियाँ हैं, नदियां हैं, ठीक है, वे डिस्कस होंगी। Let me tell you, the Ram you are talking about is in the context of Hinduism. It is not Hindu-Muslim, it is Hindu *versus* Hindu. Let me tell you, as the other day I said, I am a Hindu, but not allowed into your houses. None of your Prime Ministers allow me to touch their food. You do not allow me to touch your water. But yet, I am a great devotee; I go. हमारे हर गाँव में एक छोटा मंदिर होता है। वहाँ

विलेज गॉड होते हैं। ऐसा है कि नहीं, लक्ष्मण साहब को मालूम है। हम लोगों के लिए वह ग्राम देवता है।

आज आप अयोध्या की बात करते हैं। अगर आप अयोध्या के बारे में यह कहते हैं कि यह बहुत बड़ी आर्किटेक्चर है, आकर देखिए, तो ठीक है, आर्किटेक्चर बहुत अच्छा होगा, मेरे विलेज में जो टेंपल है, वह उतना बड़ा नहीं है, वह टूटा हुआ टेंपल है, पत्थर है, उसको सब लोग हनुमान मानते हैं। हमारा कोई ऐसा गाँव नहीं है, जहाँ हनुमान का मंदिर नहीं होगा। इसलिए please understand, अगर आप Hinduism को a religion और हिन्दू कहते हैं; it is of a universal character. *एकं सत् विप्रा बहुधा वदन्ति।* Truth is one, we call it by names. जो मर्जी हो, आप वह बोलने दीजिए, गॉड एक है, आप यह तो मानते हैं! लेकिन उसको डेफर कीजिए, इसमें हिन्दू-मुस्लिम की बात ही क्या है और क्यों यह लड़ाई हो रही है? मैं अपने प्रैक्टिकल एक्सपीरिएंस से, पर्सनल एक्सपीरिएंस से बताता हूँ, I am not allowed to touch scriptures books. मैं आज की बात नहीं कर रहा हूँ, मैं बचपन की बात कर रहा हूँ। हमारे घर के बाजू में एक बहुत बड़े पंडित थे, वे स्क्रिप्चर्स भेजते थे। हम लोग इस डर से भाग रहे हैं। अगर आप आगमा राइट्स की बात कर रहे हैं, संस्कार की बात कर रहे हैं, तो Shankaracharyas should have been there to do Pranpratishtha. That is what Agama Shashtra said. The Registrar of Osmania University came and told me this, "शंकराचार्य के बिना, there cannot be प्राण प्रतिष्ठा। यह प्रतिष्ठान हो सकता है, लेकिन प्राण प्रतिष्ठा होने के लिए शंकराचार्य होने चाहिए।" मैंने कहा कि मैं तो वह नहीं जानता। What Prime Minister has done, I totally agree here. I am appreciating, I have great regard for him. वे 11 दिन उपवास पर थे। कोई कह रहे थे कि कौन ऐसे रह सकता है, किसी ने ऐसा पूछा, तो हम लोग भी Sri Ayyappa के लिए केरल जाते हैं, तो एक मंथ, 40 दिन हम खाना ही नहीं खाते हैं, न ही सोते हैं, न चप्पल पहनते हैं, काले कपड़े पहनते हैं, एक-एक पद्धति होती है। इसलिए बहुत चीज होती है। मैं फिर केरल के बारे में बताता हूँ। वहाँ बलि की पूजा होती है, whom you call as Asura Emperor. आपके लिए वे असुर हैं, लेकिन केरल वालों के लिए वे बहुत बड़े emperor हैं। केरल के लोग चाहते हैं कि हर साल बलि आयें। Every year, they celebrate Onam seeking Emperor Asura Bali to come back. ...*(Time-bell rings)*... उसको किसने मारा? आप जो राम की बात कह रहे हैं, उन्हीं विष्णु के अवतार वामन ने उनको जमीन में गाड़ दिया। इसमें बहुत सी चीजें हैं। इसीलिए कूर्म पुराण बोलता है कि "This society consists of various communities. They have various Gods; they have various rites; they have various rituals; they respect them." That makes Hinduism. Hinduism is not one book. I have read little Rigveda. There is not much of philosophy in it. Later, works like *smritis* have a philosophy, to offer.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Please conclude now. Your time is over.

DR. K. KESHAVA RAO: So, Sir, what I am saying is, Hinduism is a greatest thought because it is transcendental. Whatever is true which transcends time and space is

Truth. इसीलिए महात्मा गांधी ने इस कंसेप्ट में गॉड को माना। Lot of people don't agree with his philosophy. Yet, उन्होंने इसीलिए किया कि...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Dr. Keshava Rao, please conclude.

डा. के. केशव राव: सर, मैं कहता हूँ कि कोई controversy चला कर Hinduism को ऐसा मत कीजिए। ...(**समय की घंटी**)... अभी उन्होंने प्रभु जगन्नाथ की बात की। किसी ने किन्हीं और की बात की।

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Please conclude. Mr. Aneel Prasad Hegde. ...(*Interruptions*)...

डा. के. केशव राव: मैं तो उनकी बात कर रहा हूँ। ...(**व्यवधान**)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Thank you. Mr. Aneel Prasad Hegde. ...(*Interruptions*)...

डा. के. केशव राव: मैं तो तिरुमाला के वेंकटेश्वर की बात कर रहा हूँ। ...(**व्यवधान**)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Thank you. Now, Mr. Aneel Prasad Hegde.

श्री अनिल प्रसाद हेगडे (बिहार): उपसभापति महोदय, मुझे बोलने का समय देने के लिए धन्यवाद। राम मन्दिर के ऐतिहासिक निर्माण और प्राण-प्रतिष्ठा विषय पर यह जो शॉर्ट ड्यूरेशन डिस्कशन है, इसमें मैं पार्टिसिपेट करने के लिए खड़ा हूँ। इस सदन में यह मेरी आखिरी स्पीच है।

महोदय, मैं अपनी पार्टी के नेता नीतीश कुमार जी को मुझे यहाँ पर भेजने के लिए धन्यवाद देता हूँ। मैं आदरणीय प्रधान मंत्री जी को यह भव्य राम मन्दिर बनाने के लिए बधाई देता हूँ। नीतीश कुमार जी के नेतृत्व वाला मेरा दल हमेशा राम मन्दिर विवाद को दोनों धर्मों के लोगों के बीच आपसी सहमति से या न्यायालय के फैसले से सुलझाने के पक्ष में रहा है।

महोदय, चार साल पहले न्यायालय द्वारा विवाद सुलझ गया, इसका मैं स्वागत करता हूँ। वैसे 28 साल पहले आदरणीय चन्द्रशेखर जी जब प्रधान मंत्री थे, उस समय यहाँ के कुछ सदस्य मंत्री भी थे। उस समय कांग्रेस के बाहरी समर्थन से वह सरकार चल रही थी। तब चंद्रशेखर जी ने राम जन्मभूमि न्यास और ऑल इंडिया बाबरी मस्जिद एक्शन कमेटी को कांफिडेंस में लिया था। वैसे बीजेपी के नेता आदरणीय भैरों सिंह शेखावत जी का भी बहुत योगदान रहा। इस विवाद को आपसी सहमति से सुलझाने के लिए कोशिश हुई। लेकिन राम मन्दिर विवाद सुलझ जाएगा, तो हिन्दू और मुस्लिम को बाँट कर रखने की वोट बैंक पोलिटिक्स की अपॉर्चुनिटी हाथ से निकल जाएगी, इसलिए पुलिस के जवान राजीव गांधी जी के घर के बाहर खड़े थे और इस कारण उस सरकार को, चंद्रशेखर जी की सरकार को गिरा दिया गया। वैसे प्रमोद तिवारी जी ने सही कहा, उनको यह मुद्दा जिन्दा रखना था, इसीलिए उस सरकार को गिरा दिया गया। राम मन्दिर 28 साल

पहले ही बन सकता था, लेकिन इसी कारण से, चंद्रशेखर जी की सरकार गिरा दिये जाने के कारण इसमें इतनी देरी हुई। वैसे मेरी पार्टी के चार-चार प्रधान मंत्रियों को कांग्रेस पार्टी ने प्रधान मंत्री पद से हटा दिया। चौधरी चरण सिंह जी, चंद्रशेखर जी, देवेगौड़ा जी और गुजराल जी को भी हटा दिया, इसलिए कि ये चारों लोग परिवार से बाहर के थे। इतना कहते हुए, मैं राम जन्मभूमि पर भव्य राम मन्दिर बनाने के लिए प्रधान मंत्री जी को धन्यवाद देता हूँ, नमस्कार।

श्री उपसभापतिः धन्यवाद। माननीय श्री रामदास अठावले। Not present. माननीय डा. के. लक्ष्मण।

डा. के. लक्ष्मण (उत्तर प्रदेश)**:** माननीय उपसभापति जी, सर्वप्रथम आपको राम-राम, प्रधान मंत्री जी को राम-राम और आप सभी सम्माननीय सदस्यों को भी राम-राम। आज का दिन हम सबके लिए गौरव का दिन है। मैं सर्वप्रथम अपनी पार्टी के शीर्ष नेतृत्व और माननीय प्रधान मंत्री, नरेन्द्र मोदी जो को भी धन्यवाद देता हूँ कि उन्होंने मुझे इस पवित्र प्रस्ताव पर बोलने का अवसर दिया। मैं मोदी जी के द्वारा 22 जनवरी, 2024 को प्राण-प्रतिष्ठा के दिन बोले हुए शब्द से अपनी बात की शुरुआत करूँगा। उन्होंने कहा, "राम आग नहीं, ऊर्जा हैं। राम विवाद नहीं, समाधान हैं। राम सिर्फ हमारे ही नहीं हैं, राम तो सबके हैं। राम सिर्फ वर्तमान नहीं, राम अनंतकाल हैं। यह भारत का समय है और भारत अब आगे बढ़ने वाला है, शताब्दियों के इंतजार के बाद ये पल आया है, अब हम रुकेंगे नहीं।" इन्हीं शब्दों के बीच मैं कुछ शब्द और शामिल करना चाहता हूँ कि राम सर्वव्यापी है और सर्वस्पर्शी भी हैं। कण-कण में राम हैं, मन-मन में राम हैं, रोम-रोम में भी राम हैं। उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम तक राम ही राम हैं। 500 साल के संघर्ष के बाद, सदियों के बाद भगवान रामलला की प्राण-प्रतिष्ठा हुई है, इसको हम बहुत महत्वपूर्ण और ऐतिहासिक मानते हैं। आज राम मंदिर ने आकार लिया है। इस संघर्ष में हजारों की संख्या में लोगों ने अपना बलिदान दिया है। उच्चतम न्यायालय के फैसले के बाद मोदी जी का संकल्प, राम जन्म स्थली पर एक भव्य राम मंदिर बनाने का था। पंडितों के द्वारा प्रधान मंत्री जी को प्राण-प्रतिष्ठा के अनुष्ठान के लिए तीन दिन के उपवास का सुझाव दिया था, मगर प्रधान मंत्री, नरेन्द्र मोदी जी ने तीन दिन के बदले 11 दिनों तक सिर्फ नारियल पानी पीकर, जमीन पर सोकर निष्ठा से उपवास रखते हुए, 140 करोड़ लोगों के प्रतिनिधि के रूप में पूजा में भाग लिया। इसलिए हम मानते हैं कि Modi is not just a human being; he is a God-sent man, क्योंकि ऐसा ही आदमी किसी असंभव कार्य को संभव करके दिखा सकता है। चाहे अनुच्छेद 370 हो, चाहे महिलाओं को 33 प्रतिशत आरक्षण देने का मामला हो, चाहे भव्य राम मंदिर निर्माण का संकल्प हो। Now, apart from Ram Mandir, Ayodhya has now become one of the best spiritual cities in the world. पर्यटक शाखा के माध्यम से जो आँकड़े दिए गए हैं, उनके अनुसार अयोध्या में प्राण-प्रतिष्ठा के पूर्व हर साल दो लाख भक्त राम मंदिर पहुँचते थे, अब यह आशा है कि अब यह आँकड़ा साल में दो करोड़ पहुँचने वाला है। भगवान ने जिस तरह से दक्षिण से लेकर उत्तर तक प्रवास किया, जैसा कि हमारे बुजुर्ग नेता, के. केशव राव जी ने बताया। मैं भद्राचलम से आता हूँ, जिसको दक्षिण की अयोध्या माना जाता है। जहाँ-जहाँ भगवान श्रीराम के चरण-कमल पड़े, मोदी जी ने वहाँ-वहाँ जाकर उस धरती का वंदन किया और भगवान श्रीराम का पूजन किया। प्रभु राम ने तीन महान समुद्रों के संगम पर,

रामेश्वर में जो शिवलिंग स्थापित किया, मोदी जी वहाँ भी गए थे। मोदी जी ने अपनी तीर्थ यात्रा के दौरान सबसे पहले महाराष्ट्र में कालाराम मंदिर में भगवान के दर्शन और अर्चना की। उसके बाद वे आंध्र प्रदेश के लेपाक्षी के वीरभद्र स्वामी मंदिर में गए और वहाँ पर उन्होंने पूजा-पाठ किया। उसके बाद उन्होंने केरल के गुरुवायुर मंदिर और त्रिप्रयार श्री रामास्वामी मंदिर के दर्शन भी किए। इसके बाद तमिलनाडु के तिरुचिरापल्ली के श्री रंगनाथास्वामी मंदिर, जिसको हम वैकुंठ एकादशी के नाते पवित्र मानते हैं, वे इस मंदिर में भी गए। हम इस मंदिर में भगवान विष्णु का लेटा हुआ रूप देखते हैं, जिसे श्री रंगनाथास्वामी मंदिर के नाम से जाना जाता है। मोदी जी ने उस श्री रंगनाथास्वामी मंदिर के भी दर्शन किए। जब राम की प्राण-प्रतिष्ठा होती है, तो उसका प्रभाव वर्षों, शताब्दियों तक नहीं, बल्कि हजारों वर्षों के लिए होता है। यह जो पवित्र कार्यक्रम हुआ था, उसकी चर्चा में आज हम भाग ले रहे हैं। श्री राम पर चर्चा करते समय आदिवासी एवं ओबीसी समुदाय का प्रतिनिधित्व करने वाले माँ शबरी और निषादराज केवट जैसे महान भक्तों को याद करना अनिवार्य है। राम राज्य की कल्पना में पिछड़े वर्गों और अनुसूचित जातियों एवं अनुसूचित जनजातियों का सशक्तिकरण अनिवार्य हो जाता है। वर्तमान सरकार में, मोदी जी के नेतृत्व में यह सुनिश्चित करने की दिशा में पूरी लगन से काम किया गया है और हर समुदाय के सशक्तिकरण की भावना के साथ काम किया गया है। इन सब कार्यों से आज मोदी जी ने 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास, सबका प्रयास' को चरितार्थ कर दिया है। माननीय प्रधान मंत्री मोदी जी ने बताया कि राम राज्य, सुशासन चार स्तंभों पर खड़ा होता है और ये चार स्तंभ हैं - सम्मान से, बिना डर के हर कोई सिर ऊंचा करके चल सके, जहां हर नागरिक के साथ समान व्यवहार हो, जहां कमजोर की सुरक्षा हो और जहां धर्म यानी कर्तव्यपरायणता हो, जनता ही राज्य है और सरकार जनता की सेवा में है। इस तरह, आज मोदी जी की सरकार राम राज्य और सुशासन स्थापित करने के लिए कटिबद्ध होकर काम कर रही है। प्रधान मंत्री मोदी जी ने आज देश की राजनीति की संस्कृति भी बदल दी है। Now, it is time for politics of performance under good governance and transparent accountability. इसलिए irrespective of caste, creed, religion, region and language, we are all one. इसी भावना से आज प्रधान मंत्री ने सुशासन के लिए जाति-पाँति, राजनीतिक दल, धर्म व अन्य सब चीजों से ऊपर उठकर ज्ञान की बात की है। ज्ञान, मतलब GYAN. G means गरीब, Y means युवा, A means अन्नदाता और N means नारी है। हम लोग राम राज्य जरूर ला पाएंगे और यह भगवान राम के आशीर्वाद और यशस्वी प्रधान मंत्री जी के नेतृत्व में संभव हो पाएगा।

सर, हमारे पूर्वज, यानी हमारे दादा-परदादा राम के बिना नहीं जी पाते थे, इसलिए वे राम के प्रति इतनी भक्ति प्रदर्शित करते थे कि हमारे हर गांव में राम का मंदिर है, हर गांव में हनुमान का मंदिर है और इसीलिए उस पीढ़ी ने हर बच्चे का नाम राम के नाम के साथ जोड़ा था। हमारे एक महान दलित नेता, बाबू जगजीवन राम के नाम में राम है, कांशीराम के नाम में राम है, रामविलास पासवान के नाम में राम है। इसी तरह, पूर्व राष्ट्रपति राम नाथ कोविंद के नाम में भी राम है। डा. राम मनोहर लोहिया, जो एक समाजवादी नेता थे, उनके नाम में भी राम है, सीताराम केसरी के नाम में भी राम है, सीताराम येचुरी, जो वामपंथी हैं, उनके नाम में भी राम है। इस तरह, इस देश में बगैर राम का कोई नाम नहीं है। ...(**समय की घंटी**)...

[**उपसभाध्यक्ष (डा. अमर पटनायक)** *पीठासीन हुए।*]

उपसभाध्यक्ष (डा. अमर पटनायक): डा. के. लक्ष्मण, अब आप कन्क्लूड कीजिए।

डा. के. लक्ष्मण (उत्तर प्रदेश): सर, मैं केवल इतना कहते हुए अपने शब्दों को विराम देना चाहता हूँ कि राम भारत की आस्था हैं, भारत के आधार हैं, भारत के विचार हैं। राम विधान हैं, चेतना हैं, चिंतन हैं, प्रतिष्ठा हैं और राममय की नीति भी हैं। राम निरंतर भी हैं, राम व्यापक विश्व हैं, इसीलिए देश भर में आज एक ही नारा गूंज रहा है कि जो राम को लाया है, उसे हम दोबारा लाएँगे, धन्यवाद।

THE VICE-CHAIRMAN (DR. AMAR PATNAIK): The next speaker is Shri Randeep Singh Surjewala; you have ten minutes.

श्री रणदीप सिंह सुरजेवाला (राजस्थान): उपसभाध्यक्ष जी, भगवान श्री राम के मंदिर की यहां बात हुई, पर भगवान राम के मंदिर में शीश झुकाने से पहले, सियाराम की आराधना से पहले राम को आत्मसात करने की भी आवश्यकता है। कौन हैं तुलसीदास के राम? कौन हैं कबीर और रहीम के राम? कैसे हैं गांधी के राम? क्या हैं जन-जन के राम? हम यह जान लें कि राम तो मोहब्बत का पैगाम हैं, राम तो न्याय हैं, राम तो करुणा हैं, राम तो कर्तव्य का बोध हैं, राम तो वचन की मर्यादा हैं, राम मूल्यों और आदर्शों की अनुपालना हैं, राम तो निर्बल के हैं, दीन-हीन के हैं, राम तो शबरी के हैं, राम तो गरीब की झोपड़ी में टिमटिमाता हुआ एक दीया हैं, राम तो भेद-भाव, छुआछूत और विषमता के खिलाफ उठने वाली हर आवाज़ हैं, इसीलिए राम सत्य हैं। उपसभाध्यक्ष जी, मैं सोचता हूँ कि जब राम ही मोहब्बत का पैगाम हैं...तो फिर राम के नाम पर नफरत कैसे फैलाई जा सकती है! जब राम वचन की मर्यादा के लिए 14 वर्ष का वनवास हैं, तो फिर हुक्मरान रोज़ वचन तोड़ कर सत्ता का भोग कैसे कर पाते हैं! जब राम न्याय के प्रतीक हैं, तो फिर समाज के मठाधीश राम के नाम पर शोषित और वंचितों के खिलाफ चौतरफ़ा अन्याय कैसे कर सकते हैं! जब राम संयम और सहिष्णुता हैं, तो फिर सत्ताधारी शक्तियां विभाजन और हिंसा के रास्ते पर क्यों चल रही हैं! जब राम शबरी के झूठे बेर हैं, तो फिर समाज के शोषितों, वंचितों, आदिवासियों, दलितों और पिछड़ों को भेदभाव का कोपभाजन क्यों बनना पड़ता है! जब राम नैतिकता की नीति और आदर्शों की उत्तमता हैं, तो फिर शासन की नीतियां जनमत के बहुमत को त्याग कर कुछ पूंजीपतियों की गोदी में कैसे बैठ गईं! शायद इसीलिए तुलसीदास जी ने कहा है, मेरे साथी अभी यहां नहीं है, वे क्वोट कर रहे थे, तो इसलिए मैं कहना चाहता हूं -

"जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी।
सो नृपु अवसि नरक अधिकारी।।"

अर्थात् जिसके राज्य में प्यारी प्रजा दुखी रहती है, वह राजा अवश्य ही नरक का अधिकारी है।

सभापति महोदय, जब राम न्याय, करुणा, संयम, सहिष्णुता, सदाचार, आदर्श और कर्तव्य के प्रतीक हैं, तो राम के नाम पर कभी भी नफरत, नकारात्मकता, निराशा, विवाद,

वैमनस्य, विद्वेष और हिंसा नहीं फैलाई जा सकती। यही राम नाम का सार है। हम सब, पूरा देश और पूरी दुनिया भगवान राम को मर्यादा पुरुषोत्तम के नाम से जानती है। महोदय, मर्यादा पुरुषोत्तम क्यों! यानी शासक द्वारा मर्यादाओं का अनुसरण, शासक की साधारण से साधारण नागरिक के प्रति जवाबदेही इसका सार है। कोई भी, कैसे भी, कभी भी शासक और सरकार से सवाल पूछ सकता है, जवाबदेही मांग सकता है, न्याय की आवाज़ उठा सकता है, शासक के आचरण पर सवाल खड़े कर सकता है, यही राम राज्य है। तुलसीदास जी के रामचरितमानस के उत्तरकांड में भगवान राम इसी लोकतंत्र की व्याख्या करते हैं, जब वे जनमत से संवाद करते हैं, मैं वे चार लाइनें यहां पढ़कर सुनाना चाहता हूं -

"सुनहु सकल पुरजन मम बानी। कहउँ न कछु ममता उर आनी।
नहिं अनीति नहिं कछु प्रभुताई। सुनहु करहु जो तुम्हहि सोहाई।।"
"सोइ सेवक प्रियतम मम सोई, मम अनुसासन मानै जोई।
जौं अनीति कुछ भाषौं भाई, तौ मोहि बरजहु भय बिसराई।।"

अर्थात् राम कहते हैं कि मैं राजा तो हूं, पर बेलाग कहता हूं - हे अयोध्याजन, आप अपने विवेक से सुनने और करने को स्वतंत्र हैं। अगर मैं भी अनीति करूं, तो आप मुझे रोक देना। क्या राम की इस मर्यादा की कसौटी पर आज के शासक और हुक्मरान खरा उतरते हैं! क्या आज सवाल पूछने पर आवाज़ दबा नहीं दी जाती है, क्या सत्ता से सवाल पूछना अब जेल जाने का रास्ता नहीं बन गया है!...(**समय की घंटी**)...

THE VICE-CHAIRMAN (DR. AMAR PATNAIK): Just to inform, आपका बोलने का समय खत्म हुआ, अब आप extended time पर बोल रहे हैं।

श्री रणदीप सिंह सुरजेवालाः क्या शासक के आचरण और नीतियों पर सवाल अब ईडी, सीबीआई, इन्कम टैक्स का कोपभाजन बनने पर मजबूर नहीं कर देते! क्या शासक के अंदर एक साधारण व्यक्ति के सवाल का जवाब देने की हिम्मत बची है! शायद इसीलिए तुलसीदास जी ने रामचरितमानस में राम राज्य की अवधारणा को लेकर कहा -

"दैहिक दैविक भौतिक तापा। राम राज नहिं काहुहि ब्यापा।
सब नर करहिं परस्पर प्रीती। चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीती॥

अर्थात् राम राज्य में किसी को तकलीफ़ नहीं होगी, तब न बेरोज़गारी थी, न महंगाई थी, न संस्थाओं का दुरुपयोग किया जाता था। इतना ही नहीं, सभी धर्म के लोग परस्पर सद्भाव से रहते थे। क्या वर्तमान सत्ता और उसके शासक इस सद्भाव और सदाचार पर खरे उतरते हैं? मैं यह उनके विवेक पर छोड़ता हूं। सभापति जी, महात्मा गांधी भगवान राम के सबसे बड़े उपासकों में से एक थे। उनके प्रिय भजन '*रघुपति राघव राजा राम, पतित पावन सीता राम, ईश्वर अल्लाह तेरे नाम, सबको सन्मति दे भगवान।*' की यह आवाज आज भी हमारे कानों में गूंजती है। 1929 में

उन्होंने यंग इंडिया पत्रिका में लिखा था-"राम राज्य का प्राचीन आदर्श निस्संदेह सच्चे लोकतंत्र में से एक है, जिसमें सबसे कमजोर नागरिक बिना किसी कानूनी कार्यवाही के त्वरित न्याय के प्रति आश्वस्त हो सकता है।" क्या आज का शासन महात्मा गांधी की राम-राज्य की इस परिकल्पना पर खरा उतरता है? मैं यह उनके विवेक पर छोड़ता हूं।

महोदय, उत्तर भारत, खास तौर से हरियाणा में जब हम एक-दूसरे से मिलते हैं, तो राम-राम कहते हैं। यह बात लक्ष्मण जी भी कह रहे थे। इस दो बार राम के उच्चारण का क्या मतलब है? एक राम वे हैं, जो वचन की मर्यादा के लिए महलों को त्याग कर 14 साल वनवास में चले गए थे और एक राम वे हैं, अयोध्यापति, जो न्याय और प्रेम के प्रतीक हैं। सर मैं कन्क्लूड कर रहा हूं। कबीर जी ने कहा था कि

"मोको कहां ढूंढ़े बंदे, मैं तो तेरे पास में।
ना तीरथ में, ना मूरत में, ना एकांत निवास में।
ना मंदिर में, ना मस्जिद में, ना काबे-कैलाश में।।
ना मैं जप में, ना मैं तप में, ना मैं व्रत उपवास में।
ना मैं क्रियाकर्म में रहता, ना ही योग संन्यास में।।
मोको कहां ढूंढ़े बंदे, मैं तो तेरे पास में।।
नाहिं प्राण में नाहिं पिंड में, ना ब्रह्मांड आकाश में।
ना मैं भृकुटी भवर गुफा में, सब श्वासन की श्वास में।।
खोजी होए तुरंत मिल जाऊं, एक पल की ही तलाश में।"

महोदय, मेरी पार्टी ने सदैव कहा कि जो निर्णय सुप्रीम कोर्ट से आए, उसे सब देशवासी स्वीकारें। सुप्रीम कोर्ट के 9 नवंबर, 2019 के निर्णय के अनुसार श्रीराम मंदिर का निर्माण हुआ है, इसका ससम्मान है, पर यह भी जान लें कि राम प्रेम है, न्याय है, सहिष्णुता है, सदाचार है, आदर्श है। ये सब हैं, पर राम नाम और राम दलगत राजनीति का विषय नहीं हो सकते। राम नाम को राजनीतिक वोट के लिए इस्तेमाल करना पाप है। राम के नाम पर नफरत फैलाना महापाप है और राम के नाम पर हिंसा नर्क का रास्ता है। इसलिए अब भी अगर आप नहीं बदले, तो भगवान राम आपको कभी माफ नहीं करेंगे। जय सिया राम!

THE VICE-CHAIRMAN (DR. AMAR PATNAIK): Thank you. Now, Dr. L. Murugan. You have eight minutes' time. Are you going to speak in Tamil?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF FISHERIES, ANIMAL HUSBANDRY AND DAIRYING; AND THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF INFORMATION AND BROADCASTING (DR. L. MURUGAN): Respected Vice-Chairman, Sir, today, it is my first speech, and that is why, I would like to speak in Tamil language.

THE VICE-CHAIRMAN (DR. AMAR PATNAIK): Please go ahead.

DR. L. MURUGAN: * "Respected Vice Chairman, Sir, In Chola's regime, Sengol was used for transfer of power, for good governance, for efficient administration and for guiding democratic values.

Such a noble Sengol is installed in this New Parliament Building. Sengol symbolises good governance. Hon. Prime Minister of India, Shri Narendra Modi, had installed such noble Sengol in the New Parliament Building. It is a mark of respecting Tamil language, Tamil culture, Tamil heritage and the Tamil masses. I thank him for this gesture. In such a maginificient House, this discussion about the consecration ceremony of holy temple is taking place now. I thank all hon. Members and I thank you also, Sir, for giving me the opportunity to participate in this discussion.

It is the dream of every Indian to build a temple for Lord Ram in Ayodhya. It is the desire of numerous people over hundreds of years. It is a struggle of almost five hundred years. Such a long standing struggle had achieved its success only now. There was a long legal battle to achieve this goal. At this juncture, I would like to mention about Mr. Parasaran, a senior advocate from Tamil Nadu. He is 92 years old now. He had spent maximum part of his life in carrying out research of the documents related to the existence of Ram Mandir at Ayodhya. He substantiated his arguments in Court with valid evidences of birthplace of Lord Ram at Ayodhya. He had spent numerous weeks, numerous months and countless years for this effort. I thank him for his efforts and I also thank Mr. Mohan Parasaran for his assistance. After the delivery of judgement, it has taken only two years for our hon. Prime Minister to complete the construction of historic temple for Lord Ram. Since the days of performance of Bhoomi Puja, till the consecration ceremony, this gigantic task has been completed in two years. Thousands of people had lost their lives in the struggle for the construction of this temple. Their sacrifices have borne fruits now. We have the fortune of witnessing the consecration ceremony of this historic temple in our life time. We have the blessing of witnessing this historical ceremony by our own eyes. We feel proud of this achievement.

Sir, Tamil Nadu is a spiritual land. Tamil language, Tamil culture and Tamil heritage have shown the way to other cultures. That is why, our hon. Prime Minister Narendra Modiji has reiterated the relationship of Tamil Nadu with other cultures through his motto, 'Ek Bharath Shreshta Bharath'. There is a longstanding relationship between Tamil Nadu and Kashi. In order to rejuvenate this relationship, to re-strengthen this attachment, our hon. Prime Minister organised 'Kashi Maha Sangamam'. It was organised not only once but twice. It was organised to cherish the

---

* English translation of the original speech delivered in Tamil.

relationship between Kashi and Thenkasi of Tamil Nadu, the relationship between Kashi and Sivakasi of Tamil Nadu.

Here, we have our hon. Member, Parshottam Rupalaji. Thousands of Saurashtrians had migrated to Tamil Nadu five hundred years ago. Our hon. Prime Minister organised Saurashtra Tamil Sangamam to revitalise the relationship of Saurashtrians of Tamil Nadu with Gujarat. His intention is to provide an opportunity to those displaced Saurashtrians to cherish their roots at Saurashtra. And the credit for organising this Tamil Sangamam goes to our esteemed hon. Prime Minister Shri Narendra Modi.

Now we are speaking about Ayodhya. Kasi and Ayodhya are closely interlinked with Tamil culture. In Tamil Nadu, we have places such as Rameshwaram, Ramanathapuram, Dhanushkodi and Tirupulani, which have strong relationship with Ramayana. There are references to Kashi in many Sangam literature texts. Kurinjithinai, Varanavasipatham, Ettuthogai, and Kalithogai mention about Kashi. Devaram, a Tamil classic praises Kasi as 'Vadhavur Varanasi'.

Sir, after the date was fixed for the consecration ceremony of Ram Temple, our hon. Prime Minister Shri Narendra Modi, observed severe penance for eleven days, as the true devotee of Lord Ram. He observed the penance very strictly. He visited many holy places very strictly, starting from Nashik. He visited Kerala. He spent three days in Tamil Nadu. He visited Srirangam in Tamil Nadu. What is the speciality of Srirangam? It is believed that the main deity of Srirangam is the *Kuladeivam* of Lord Ram. Kamba Ramayanam was first enacted at Srirangam. Our hon. Prime Minister visited such a holy place to have the darshan of Lord Ram's *Kuladeivam*. After Srirangam, he visited Ramnad. He took a holy dip there. Then, he visited Rameswaram. He took holy dip of all the 21 holy theerthams of Rameswaram. He slept on the bare floor at Ramakrishna Mutt and observed the penance so strictly like an ascetic saint. From there, he directly reached Ayodhya and performed the consecration ceremony.

There is a deep relationship between Tamil Nadu and Ayodhya in the present ceremony also. In this gigantic temple, there are 44 entrances. All the 44 gigantic wooden doors are sculpted by the team of master craftsman, Mr. Ramesh, who belonged to Vellisandhai of Kanyakumari District.

Mr. Vice Chairman Sir, I hail from the Namakkal District of Tamil Nadu. Our district has close relationship with Lord Ram. Twelve huge temple bells for the temple has been brought from my District of Namakkal. In addition to these huge temple bells, 36 small hand bells were also brought from there. Totally, our District had contributed 48 bells to this historic temple. This shows our Hon'ble Prime Minister's

high regard for Tamil language and Tamil culture. That is why, wherever he goes, he uses the term, "All the world is my native place, and all men are my family", the famous quote of Sangam poet, Kaniyan Poongundranaar. He had used this axiom in U.N. also. He had taken the initiative to translate Tirukkural into 30 languages. I would like to quote a couplet from Tirukkural, the English translation of which says, "A king, who performs his duty honestly and protects his subjects, will be esteemed as God by his subjects." One who gives good governance, सेवा, सुशासन, गरीब कल्याण, he is treated like a God. This was told by *mahan rishi* Thiruvalluvar. तिरुवल्लुवर ने कहा कि जो अच्छा सुशासन दे रहा है, वह भगवान के इक्वल है। ऐसा तिरुवल्लुवर ने कहा। ऐसे ही हमारे प्रधान मंत्री जी गुड गवर्नेंस लेकर आए और आज इतना बड़ा काम किया। हम जो बोलते हैं, वे वैसा करते हैं, कुछ लोग बोलते हैं, पर करते नहीं है। "Our hon. Prime Minister is such a noble human being who always does what he has said. It is easy for anyone to give promises. It is not easier to implement one's promises. Thiruvalluvar has spoken about this trait in another couplet, the English translation of which says, "To say (how an act is to be performed) is (indeed) easy for anyone, but far difficult it is to do according to what has been said." Our hon. Prime Minister is one such noble human being who always does what he has said." मैं यह करूंगा, वह करूंगा, but what you have said, that you have to do. We told the nation that Ram Temple has to be built in Ayodhya. Ram Temple has been built and dedicated to the nation. हमारे प्रधान मंत्री जी ने ऐसा काम किया है। इस काम के लिए मैं प्रधान मंत्री जी को कोटि-कोटि धन्यवाद देना चाहता हूं, जय श्रीराम। महोदय, आपने मुझे यहाँ पर बोलने का अवसर दिया है, इसके लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

Jai Sri Ram! Jai Sri Ram!

श्री समीर उरांव (झारखंड): आदरणीय उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं आज बहुत उत्साहित भी हूं और भावुक भी हूं क्योंकि मुझे संसद के उच्च सदन के सदस्य के रूप में अपना अंतिम संबोधन करने का यह अवसर आया है, जिसमें राम के विचारों को रखने का अवसर मिल रहा है। महोदय, आज देश राममय है और रामराज्य की स्थापना होने जा रही है। पूरे देश में हर व्यक्ति के रोम-रोम में राम रमा है। आज माननीय प्रधान मंत्री जी के नेतृत्व में श्रीराम के आदर्शों पर चलते हुए जन कल्याण हेतु समर्पित भाव से यह कार्य चल रहा है। वर्षों के त्याग, तपस्या और अनेक राम सेवकों के बलिदान के पश्चात राम मंदिर का निर्माण हो सका है। माननीय प्रधान मंत्री जी जब राम मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा कर रहे थे, तब वे भारत के प्रत्येक नागरिक का प्रतिनिधित्व कर रहे थे।

उपसभापति महोदय, वह स्वयं में एक ऐतिहासिक क्षण था। जब टीवी पर प्राण प्रतिष्ठा होते देख रहे थे, तब सभी लोग अपने आप भावुक हो गए थे और आंखों से श्रद्धा के आंसू बह रहे थे।

महोदय, एक समय ऐसा भी था जब लोग श्रीराम को काल्पनिक व्यक्तित्व बता रहे थे। अयोध्या में उनके जन्म को काल्पनिक बताया जा रहा था। मैं झारखंड से आता हूं, झारखंड में सिमडेगा के अंदर रामरेखा धाम है। ऐसा बताया जाता है कि जब श्रीराम वनवास गए थे, उस समय

वहाँ रामरेखा में जो गुफा है, उन्होंने वहां पर विश्राम किया था। महोदय, प्राण प्रतिष्ठा के दिन भी जब रामलला की स्थापना हो रही थी, तब वहाँ हज़ारों श्रद्धालु पूजा कर रहे थे। वहीं पर आंजन धाम भी है। इसके लिए कहा जाता है कि वहां पर भगवान हनुमान ने जन्म लिया था। वहां पहाड़ के ऊपर गुफा है। यह भी बताया जाता है कि वह नेतरहाट से लगे हुए पहाड़ में है। बाल काल में जब हनुमान जी ने सूर्योदय देखा और जमीन से निकलती हुई लाली देखी, तो उन्होंने फल समझ के उसे लील लिया था। ऐसा भी वहां पर बताते हैं। वहां पर भी समाज के सभी वर्ग के लोग, आदिवासी वर्ग के लोग पूरी श्रद्धा के साथ रामलला की स्थापना के दिन श्रद्धा भाव के साथ पूजा-पाठ कर रहे थे।

महोदय, मंदिर निर्माण के पश्चात् प्राण प्रतिष्ठा के कार्यक्रम के समय, जिस प्रकार से पूरा देश उत्सव के एक नए रंग में रंग गया था, जिस प्रकार लोगों ने अपने आराध्य के स्वागत हेतु अपने घरों में दीप प्रज्ज्वलित कर दिवाली मनाई थी, उस दिन राम को काल्पनिक मानने वाले लोगों ने श्रीराम की अदृश्य शक्ति का एहसास जरूर किया होगा। राम मंदिर आंदोलन में हमारे विचार-परिवार के अनेकों लोगों ने बलिदान दिया है। आज मैं भारत माता के उन सभी वीर सपूतों को शीश झुकाकर नमन करता हूं एवं श्रद्धांजलि देता हूं।

महोदय, राम मंदिर निर्माण के पश्चात् आज देश के आदिवासी श्रीराम के दर्शन के लिए उत्साहित हैं। आदिवासी समाज को प्रभु श्रीराम से एक विशेष लगाव है। वे सुबह उठते ही राम-राम कहकर एक-दूसरे का अभिवादन करते हैं। मैं बताना चाहता हूं कि माता शबरी एक वनवासी थीं। भगवान राम स्वयं उनकी कुटिया में गए और माता ने बहुत उत्साहित होकर उनको अच्छे और मीठे बेर खिलाने के लिए, उनको चख-चख कर बेर खिलाए। ऐसे ही प्रेम और भाव का लगाव है। हमारे वनवासी लोग कई वर्षों तक भगवान राम के साथ वनवास के समय रहे हैं। इसीलिए आदिवासी समाज आज भगवान राम के आदर्शों के साथ चलता है। वह इतने प्रेम के साथ रहता है, इतना व्यावहारिक रहता है, अपनों के लिए अपनत्व समझता है, जैसे हनुमान चालीसा में कहा गया है -

"सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा,
बिकट रूप धरि लंक जरावा।"

इसका अर्थ है कि अपने लोगों के साथ प्रेम से रहो, पूरे व्यावहारिक रूप से रहो। जिस समय सीता माता से हनुमान जी मिलने के लिए अशोक वाटिका गए थे, तो सूक्ष्म होकर, प्रेम भाव से, आस्था और विश्वास के साथ वहां गए थे और वही हनुमान जब दुश्मन की लंका में गए, तो उन्होंने लंका को जला दिया। इस भाव से जनजाति समाज भी अपने भगवान राम के साथ अपना वास्ता, नाता और विश्वास लेकर चलता है। भगवान श्रीराम से इसी लगाव के कारण देश के आदिवासी समाज ने राम मंदिर आंदोलन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। मैं बताना चाहता हूं कि जब राम जन्म भूमि मुक्ति आंदोलन के समय अयोध्या के लिए जन जागृति चल रही थी, उस समय आदिवासी गांव मध्य प्रदेश में अलीराजपुर में इस कार्यक्रम का समापन हुआ। उस समय आदिवासी समाज के लोगों ने हज़ारों की संख्या में वहां पर एकत्रित होकर राम जन्म भूमि के लिए काम किया था।

महोदय, मैं बताना चाहता हूं कि हमारे झारखंड से भी 1992 में सांझिया कोरवा जो प्रिमिटिव ट्राइब है, उनके नेतृत्व में लोग कार सेवा में निकले थे, लेकिन उनको उत्तर प्रदेश के

गोरखपुर में ट्रेन से उतारकर एक स्कूल के अंदर भेज दिया गया। उनको एक सप्ताह तक अन्न पानी कुछ नहीं दिया, लेकिन भगवान राम की कृपा थी, इसीलिए वे लोग बहुत ही सुरक्षित और व्यवस्थित होकर अपने गांव लौट पाए। मैं बताना चाहता हूं कि भगवान श्री राम के साथ अपने विशेष लगाव, भाव के साथ आदिवासी समाज के लोग यातनाओं को झेलते हुए भी समर्पित भाव के साथ आगे बढ़े हैं। मैं बताना चाहता हूं कि जब राम मंदिर बन रहा था, उस समय हमारे जनजातीय गांव में जो आस्था के केंद्र हैं, वहां के 1,100 से अधिक पूजा स्थलों से मिट्टी अयोध्या में लाई गई, जहां पर आज भगवान रामलला स्थापित हुए हैं।

महोदय, पहले की सरकार राम की भक्ति करने वालों को प्रताड़ित करती थी। विपक्ष के हमारे साथी राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा के समय से ही भारतीय जनता पार्टी को कहते थे कि वह राम मंदिर पर राजनीति कर रही है। मैं इनको बताना चाहता हूं कि भाजपा ने राम मंदिर के लिए बलिदान दिया है।

5.00 P.M.

भारतीय जनता पार्टी के प्रत्येक नेता और कार्यकर्ता के मन में राम हैं, राम हैं, राम हैं, वे राम को छोड़ नहीं सकते। इसलिए प्रत्येक चुनाव में भाजपा ने राम मंदिर को अपने घोषणा-पत्र में भी शामिल किया। महोदय, विपक्ष द्वारा घोषणा-पत्र में किए गए किसी भी वादे को पूरा नहीं किया जाता है। इसलिए हमारे विपक्ष के साथियों को अपने घोषणा-पत्र को भूलने की आदत पड़ गई है, ऐसा उनका अनुमान है, इसलिए उन्होंने भाजपा के लिए यह आरोप लगाया था। लेकिन राम मंदिर पर राजनीति कैसे की जाती है, मैं इसका उदाहरण बताता हूँ। एक समुदाय विशेष को खुश करने के लिए जब राम भक्तों पर गोलियाँ चलाई जाती हैं, उसको राजनीति करना कहते हैं; जब श्री राम को टेंट में रहने के लिए मजबूर कर दिया जाता है, उसको राजनीति करना कहते हैं। महोदय, मैं विपक्ष के अपने साथियों को बताना चाहता हूँ कि भाजपा इन गंभीर विषयों पर राजनीति नहीं करती, परंतु यदि आपको भगवान श्री राम को उनका स्थान दिलाना राजनीति लगती है, तो मैं बताना चाहता हूँ कि आगे भी अन्य स्थानों पर भी हम भारत की सांस्कृतिक विरासत को पुनर्जीवित करते रहेंगे, ऐसा संकल्प है। महोदय, मैं आज देश के राजनीतिक परिदृश्य को कुछ पंक्तियों के माध्यम से सदन के समक्ष रख कर अपनी बात को समाप्त करना चाहता हूँ।

"*रामचंद्र कह गए सिया से एक ऐसा दिन भी आएगा,*
भाजपा लाएगी 400 सीट, विपक्ष गठबंधन भी बचा न पाएगा।"

जय श्री राम!

THE VICE-CHAIRMAN (DR. AMAR PATNAIK): Shri Baburam Nishad, five minutes.

श्री बाबू राम निषाद (उत्तर प्रदेश): आदरणीय उपसभाध्यक्ष महोदय, आपने मुझे राम मंदिर के विषय पर बोलने का अवसर दिया है, इसके लिए मैं आपका बहुत-बहुत आभार और धन्यवाद

करता हूँ। मैं इस देश के यशस्वी प्रधान मंत्री, नरेन्द्र भाई मोदी जी का भी आभार करता हूँ, अभिनंदन करता हूँ।

[**उपसभाध्यक्ष (श्रीमती सीमा द्विवेदी)** *पीठासीन हुईं।*]

मैं इस देश के ऊर्जावान गृह मंत्री, अमित भाई शाह जी का भी धन्यवाद करता हूँ कि आज मुझे राम मंदिर के विषय पर बोलने का अवसर मिला है। आदरणीय उपसभाध्यक्ष महोदया, जब राम मंदिर की बात आई है, तो निश्चित रूप से मेरे मन के अंदर हर्ष है। मुझे खुशी है कि जो ध्येय और जो उद्देश्य लेकर मैं गाँव से निकला था, वह पूरा हुआ। जब मैंने होश सँभाला था, तो मैं रामायण की चौपाइयों से ही अवगत हुआ था, क्योंकि मेरे घर में भी रोज शाम को रामायण पाठ होता था। निश्चित रूप से उस रामायण के भाव से अवगत होते-होते जब होश आया कि राम मंदिर नहीं है, तो मैंने प्रण किया था और मंदिर बनाने का संकल्प किया था। जिस दल और जिस विचारधारा के लोगों ने यह बीड़ा उठाया है, मैं उसके साथ खड़े होकर काम करने के लिए चला था। निश्चित रूप से भारतीय जनता पार्टी की विचारधारा को थाती मानते हुए जब भारतीय जनता पार्टी ने कहा था, विश्व हिंदू परिषद ने कहा था, संकल्प लिया था, तो इस देश के करोड़ों कार्यकर्ताओं ने एक संकल्प लिया था, एक लक्ष्य लिया था कि हम मंदिर वहीं बनाएंगे, रामलला हम आएँगे। निश्चित रूप से आज मुझे हर्ष है, खुशी है, क्योंकि मैं बाबू राम निषाद हूँ, मछुआरा हूँ। जब निषाद हूँ, तो स्वाभाविक मेरे मन में और उत्साह जगता है, क्योंकि वे निषाद और केवट मेरे वंशज हैं। उन निषाद और केवट ने, जिन्होंने राम की आदर्शवादी व्यवस्था का पालन किया, निश्चित रूप से देश का ऐसा कोई कोना नहीं है, जहाँ उनके वंशज, चाहे वे निषाद हों, कश्यप हों, केवट हों, कहार हों, माँझी हों, मँझवार हों, रायकवाड़ हों, ढीमर हों, पाए न जाते हों। वे भारी संख्या में पाये जाते हैं। उस त्रेता युग में राम जी ने गले लगाया था, प्यार दिया था, स्नेह किया था, अपनी शक्ति दी थी, मुख्य समाज से हमारे समाज की जो दूरियाँ थीं, उसके लिए एक मैसेज दिया था, मित्र बनाया था, मित्र के भाव के अनुरूप सहेजने का काम किया था, चलने का काम किया था, चलाने का काम किया था।

भाइयो-बहनो, उस निषादराज के प्रति राम जी का जो श्रद्धाभाव था, निश्चित रूप से मैं कह सकता हूँ कि आज वह पिछड़ा समाज ही है, वह दलित समाज ही है, जो राम की व्यवस्था का अक्षरशः पालन करते हुए आज भी निरंतर यात्रा कर रहा है, चल रहा है। इस हिन्दुस्तान में सवा सौ करोड़ भाई-बहन हैं। यहाँ ऐसा हिन्दुत्ववादी समाज है, ऐसा हिन्दू समाज है, जो इस व्यवस्था को अपनाता है और व्यवस्था के आधार पर चलता है। तभी तो यहाँ इसकी संख्या घटाने का काम कई कालखंडों में हुआ है, लेकिन जो राम की व्यवस्था है, जो राम का समराष्ट्रीय आधार था, उस आधार पर जनता लगातार उस व्यवस्था से चली है।

महोदय, आज मैं इस सदन से माननीय प्रधान मंत्री जी का धन्यवाद करता हूँ। मैं श्री नरेन्द्र मोदी जी को धन्यवाद करता हूँ कि समाज तो राम की उस व्यवस्था का अक्षरशः पालन करते हुए आगे बढ़ रहा था, लेकिन कहीं न कहीं बड़े लम्बे कालखंड से भूखा था, प्यासा था, दवाई से अछूता था, उसको रोजगार नहीं था, रोटी नहीं थी, कपड़ा नहीं था, मकान नहीं था, उसमें विद्युत नहीं थी, शौचालय नहीं था और माँ, बहन, बेटी की इज्जत भी सुरक्षित नहीं थी। निश्चित रूप से यह

समाज मूल्यों के आधार पर खड़ा था, सिद्धांतों के आधार पर चल रहा था, मोदी जी ने निश्चित रूप से इस समाज ने आज के दौर में उस राम के कालखंड से जोड़ते हुए, एक विचार की, एक भारतीय संस्कृति की, एक धर्म की ध्वजा फहराने का काम किया है और उसके साथ-साथ इस समाज को बैठे-बिठाए घरों में रोटी, कपड़ा, मकान, दवाई और शौचालय देने का काम किया है। इसको कहते हैं - पूर्णता को प्राप्त होना।

मोदी जी, मैं बाबू राम निषाद, मछुआरा समाज की ओर से, राम के त्रेताकाल के उस निषाद की ओर से और केवट समाज की ओर से आपका आभार व्यक्त करता हूँ, अभिनन्दन करता हूँ, स्वागत करता हूँ, वन्दन करता हूँ। मैं राजनीति में घर से निकला था, पिछड़े समाज से निकला था, किसान के घर से निकला था, तो यही उद्देश्य लेकर निकला था कि इस जन की सेवा कौन कर पायेगा, लेकिन प्रधान मंत्री जी, मैं सांसद बनता या नहीं बनता, विधायक बनता या नहीं बनता, मंत्री बनता या नहीं बनता, कोई पद मिले या नहीं मिले, लेकिन हमारे गरीबों को जो हक और अधिकार आपने दिया है, मुझे सब कुछ प्राप्त हुआ है - मैं आत्मसंतुष्टि को प्राप्त हुआ हूँ। वैचारिक रूप से मेरी गाय के लिए, मेरी गंगा के लिए, मेरे राम के उस मन्दिर की स्थापना के लिए - श्रीराम का जो मन्दिर आपने स्थापित किया है, उसमें निश्चित रूप से करोड़ों राम भक्तों का समर्पण था, उसी समर्पण की आभा के अनुरूप आपने जो स्थापित किया है, चिरन्तन काल तक इसी तरीके से आपका झंडा फहरेगा। आपने बहुत हिम्मत के साथ, बहुत बुद्धि-विवेकपूर्ण निर्णय के साथ यह जो मन्दिर की स्थापना की है, निश्चित रूप से इससे समाज की आध्यात्मिक, धार्मिक संवेदनाएँ और बढ़ेंगी। मैं कह सकता हूँ कि यह हमेशा पीढ़ियों के संघर्ष, बलिदान और समर्पण का प्रतीक रहेगा। हमें श्रीराम मन्दिर बनने की बहुत प्रसन्नता है। श्रीराम के अस्तित्व को मिटाने के कई बार प्रयास किये गये हैं, लेकिन आज भी वह हमारी संस्कृति का आधार-स्तम्भ बने हुए हैं। मैं कहना चाहता हूँ कि श्रीराम इस राष्ट्र के प्राण-तत्व हैं, श्रीराम भारत की भोर का प्रथम स्वर हैं, राष्ट्र का जो मंगल करे, वही श्रीराम हैं, जहाँ नीति और धर्म है, वहीं श्रीराम हैं। श्रीराम ऐसे दीप हैं, जो कभी बुझ नहीं सकते। राम संपूर्ण भारत की कालजयी सनातन संस्कृति का मेरुदंड हैं, ऐसे हैं मेरे राम, ऐसे हैं गरीबों के राम, ऐसे हैं मजलूमों के राम, ऐसे हैं पिछड़ों के राम। राम सभी के रोम-रोम में बसते हैं, गरीबों के रोम-रोम में बसते हैं।

महोदय, मैं आज इस सदन के माध्यम से समाज के उन भाइयों को भी कहना चाहता हूं कि तब निश्चित रूप से पीड़ा होती है, जब लोग राम के अस्तित्व पर ही प्रश्न खड़ा कर देते हैं। मैं आज सदन के माध्यम से कहना चाहता हूं कि भगवान आपको सद्बुद्धि दे। मंदिर की स्थापना हुई है, आप जाइए। ऐसे लोग, जो प्रश्न करते हैं, प्रश्नचिह्न लगाते हैं, वे जाकर दर्शन करें। 'राम-राम' रटते-रटते आपकी नैया पार हो जाएगी। राम के बारे में अगर कोई गलत तरह की बयानबाजी आती है, तो बहुत पीड़ा होती है। बहुत लोग मंदिर को लेकर राजनीति करते रहे, लेकिन उस राजनीति से उनको कभी किनारा नहीं मिला। केवट, शबरी, जटायू , गिलहरी, वनवासी - राम ने ऐसे सभी लोगों की संगत और साथ लिया।

"मांगी नाव न केवट आना।
कहइ तुम्हार मरमु मैं जाना।।"

(**सभापति महोदय** *पीठासीन हुए।*)

आज मोदी जी ने समाज के अंतिम पायदान के व्यक्तियों का मर्म जान कर दस साल के शासन में उनके उत्थान के लिए काम किया। गरीब उम्मीद पालता था कि मैं नेता के चक्कर लगाऊँगा, अधिकारी के चक्कर लगाऊँगा, जिला कलेक्टर के चक्कर लगाऊँगा, तब मुझे मेरी सुविधाएँ प्राप्त होंगी, लेकिन भाइयो और बहनो, मोदी जी के सुशासन में, मोदी जी के कानून के राज में, आज मैं यह कह सकता हूँ, जो उनका हक और अधिकार था, वह घर बैठे बिठाए उनके दरवाजे और घर में पहुंचा है। मोदी जी ने उस राम की व्यवस्था को उस गरीब तक पहुंचाने का कार्य किया है।

माननीय सभापति जी, मैं ज्यादा समय नहीं लूंगा। आपने और मेरी पार्टी ने मुझे इस विषय पर बोलने के लिए समय दिया, इसके लिए मैं आपका अभिनंदन करता हूँ और धन्यवाद देता हूँ। अब मैं अपनी वाणी को विराम देता हूँ, बहुत-बहुत धन्यवाद।

डा. सोनल मानसिंह (नामनिर्देशित)**:** माननीय सभापति, राम मंदिर के बारे में बहुत कुछ सुन रही हूँ, परम संतोष हो रहा है। मैं अपने गौरवशाली यशस्वी प्रधान मंत्री श्री नरेंन्द्र मोदी जी को नमस्कार और धन्यवाद करते हुए अपनी बात आरंभ करती हूँ। सुना है 'भारत जोड़ो यात्रा' चल रही थी, लेकिन हम भूल जाते हैं कि त्रेता युग में ही श्री राम ने भारत जोड़ो यात्रा कर दी थी। अब यदि उसकी पुनरावृत्ति हो रही है, तो किस तरीके से हो रही है, वह हम देख रहे हैं।

सर, मेरा विषय यह है कि हमारे शास्त्रों में विधि-विधान है कि किसी मंदिर में जो पूजा-अर्चना होती है, वह शोडषोपचार के तहत होती है। उसमें सोलह उपचार होते हैं, जिसमें गीत, संगीत नृत्य, वाद्य, शंख, पुष्प, गंध, सुगंध, इत्यादि सोलह चीजें सम्मिलित होती हैं। मुझे अत्यंत हर्ष है कि इसी विधान और नीति का पालन किया जा रहा है और अभी वहां 45 दिन की मंडल पूजा चल रही है, जिसमें आखिरी दिन, यानी 10 मार्च को मुझे नृत्य सेवा प्रस्तुत करने का सौभाग्य मिल रहा है।

सर, मैं गुजराती हूँ और गुजरात में जो दण्डकारण्य है, वह जिला डांग कहलाता है। वहां जनजातीय लड़कियों के लिए मेरी माताजी का विश्वविद्यालय, गुरुकुल है। शबरी माता वहीं की हैं। हम लोगों ने जो गाना सीखा है, आज भी वहाँ पर वह गाना गाया जाता है। वह गाना इस प्रकार है**:**

"राम रटण ए करती जाएं, पगना ठमका देती जाएं, एली भीलड़ी रे।"

भील जाति की शबरी पैर के ठुमके देती हुई नाचती-गाती हुई, राम रटन करती हुई, खट्टे-मीठे बेरों को चखती हुई, राम आवे, उनकी राह देखती हुई..... सर, मैं उन्हीं शबरी के स्थान से आती हूँ। मुझे बहुत अच्छा लग रहा है कि उनको याद किया गया है और प्रत्येक जनजाति, प्रत्येक जाति के स्त्री-पुरुषों को भी याद किया गया है।

सर, मैं एक सुंदर कवित्त सुनाना चाहती हूँ। जब प्राण-प्रतिष्ठा के बाद ये बातें चलीं कि श्री रामलला ने आंखें खोलीं, तो ऐसा भी कहा गया कि उन्होंने अपनी पलकें भी झपकाईं। अब मंद-मंद

स्मित वाले इस मुख के दर्शन करके गोस्वामी तुलसीदास जी की मुझे ये पंक्तियां याद आईं, जिनको हम अक्सर अपने नृत्य में व्यक्त करते रहते हैं:

"अरबिंद सो आनन रूप मरंद अनंदित लोचन-भृंग पिएँ।
मनमें न बस्यो अस बालक जौं तुलसी जगमें फलु कौन जिएँ॥"

सर, श्री राम की चमक आभूषणों और वस्त्र-अलंकारों से नहीं है, बल्कि श्री राम की चमक-दमक उनकी अपनी नीतियों और अपने व्यक्तित्व से है। वे भगवान विष्णु नारायण के अवतार हैं और मर्यादा पुरुषोत्तम हैं। अभी कुछ क्षण पहले एक सम्माननीय सांसद ने कहा था कि वहां सीता माता नहीं दिखीं, जिसके कारण मंदिर अधूरा रहा, तो मेरा कहना यह है कि सीता जी भू-देवी की प्रतिमूर्ति हैं, वे स्वयं भू-देवी हैं और भू, यानी पृथ्वी पर ही तो यह मंदिर बना है, इसीलिए जब सीता माता वहाँ स्वयं हाजिर हैं, तो इसमें उनको ढूंढ़ने की आवश्यकता बिल्कुल नहीं है।

सर, मैं आपको इस भव्य-दिव्य मंदिर का एक और पहलू दिखाना चाह रही हूँ, जो सब जानते हैं और उसके बाद मुझे ऐसा लगा कि आस्था-श्रद्धा का यह महाकुंभ 'राम कुंभ' कहलाए। जब हम वहाँ प्राण-प्रतिष्ठा में बैठे तो अपलक घंटों तक सुबह से शाम तक बैठे रहे। न भूख न प्यास! जब मैंने देखा कि दक्षिण और न जाने कहां-कहां के लोग मात्र एक ही वस्त्र को परिधान के रूप में धारण करके वहां नंगे पांव चले आ रहे हैं, कोई शीर्षासन करके चला आ रहा है, कोई साष्टांग दंडवत करके चला आ रहा है, तो मुझमें एक ऐसी भावना उत्पन्न हुई, जिसको शब्दों में व्यक्त करना शायद मुश्किल है। सर, मैं आर्टिस्ट रही हूँ, लेकिन यहां नृत्य कर नहीं सकती। मैं आपको बताना चाहती हूँ कि *"अवध में जन्मे राम सलोना"* - यह हमारा जन्म का बधाई गीत है, जो वहाँ प्रस्तुत होगा। सर, मैं यह मंगल गीत गाते-गाते यहां आई और मैंने कहा कि मुझे पाँच मिनट दे दिए जाएं ताकि मैं अपने श्री रामलला के बारे में कुछ बोल सकूँ, उनका गुणगान कर सकूँ। वैसे, 10 मार्च को आप सभी आमंत्रित हैं। आप सभी अयोध्या पधारिए और हमारी नृत्य-संगीत सेवा का आनंद लीजिए, मुझे लगता है कि श्री रामलला निश्चित रूप से बहुत प्रसन्न होंगे।

सर, भगवान को सरस भक्ति पसंद है, नीरस भक्ति भगवान को कतई पसंद नहीं है, तो उसी रस की वृष्टि करते हुए मैं आपका धन्यवाद करती हूँ। मैं एक बार फिर यशस्वी प्रधान मंत्री मोदी जी का आभार व्यक्त करती हूँ, उनको बहुत-बहुत धन्यवाद देती हूँ। जय श्री राम!

डा. अशोक कुमार मित्तल (पंजाब): आदरणीय सभापति जी, आज आपने मुझे राम मंदिर की प्राण-प्रतिष्ठा के अवसर पर इस सदन में बोलने का अवसर दिया, इसके लिए आपका धन्यवाद!

सर, यह हमारा एक विश्व स्तर का ऐतिहासिक आयोजन हुआ है, जिसके हम सब साक्षी हैं। हम सबने इस शताब्दी का सबसे बड़ा त्योहार मनाया, अपने-अपने घरों में दीये जलाए, अपने गांव और अपने शहरों में मंदिर में गए और 500 वर्ष बाद प्रभु जी को अपने घर वापस लेकर आए। सर, मैं एक छोटी सी कविता से अपनी बात शुरू करना चाहूँगा:

" यहाँ की धूल भी चंदन, यहाँ कण-कण में ईश्वर है,
हो कलयुगी सारी सृष्टि में, यहाँ त्रेता निरंतर है,

यहाँ खेले थे रघुराई कभी सरयू के घाटों पर,
अयोध्या नाम है इसका, यह मेरे राम का घर है।"

सर, प्रभु श्रीराम के बिना हम भारत की कल्पना नहीं कर सकते, क्योंकि वे उत्तर से दक्षिण तक देश को जोड़ते हैं, अयोध्या से धनुषकोडी तक जन-जन को जोड़ते हैं। श्रीराम हमारी एकता, समर्पण और त्याग का प्रतीक हैं। श्रीराम रामराज्य का प्रतीक हैं। सर, हम सब नागरिक मिलकर काम करते हैं। रामराज्य जैसी सोच है, जिसमें सुशासन की कल्पना है। रामराज्य वह है, जिसमें सबको योग्य बनने और योग्यता के अनुसार अवसर प्रदान करने का अधिकार है। रामराज्य पारदर्शिता है और इसमें समाज के अंतिम व्यक्ति को भी पूरा लाभ मिलता है। ...(**समय की घंटी**)... सर, मैं आधा मिनट और लूंगा।

महोदय, अयोध्या में जो राम मंदिर बना है, यह अद्वितीय है। वैटिकन सिटी में साल में करीब 1 करोड़ पर्यटक आते हैं और हमारे राम मंदिर में एक साल में करीब 10 करोड़ से अधिक पर्यटक और श्रद्धालु आएंगे। सर, इस मंदिर में जब 10 करोड़ से ज्यादा श्रद्धालु आएंगे, तब अयोध्या विश्व की संस्कृति की राजधानी बनेगा, वह विश्व के पर्यटन की राजधानी बनेगा और वह विश्व धर्म की राजधानी बनेगा, ऐसा मेरा विश्वास है। ...(**समय की घंटी**)...
सर, मैं आखिरी दो शब्दों में अपनी बात पूरी करूंगा -

"राम ही तो करुणा में हैं, शांति में राम हैं,
राम ही हैं एकता में, प्रगति में राम हैं।
राम बस भक्तों में ही नहीं, शत्रु के चिंतन में भी राम हैं
देख तज के पाप रावण, राम तेरे मन में हैं,
मन से रावण जो निकाले, राम उसके मन में हैं।"

धन्यवाद!

श्रीमती सुमित्रा बाल्मीक (मध्य प्रदेश): माननीय सभापति महोदय, मैं आपका धन्यवाद करती हूं कि आपने मुझे प्रभु श्रीराम नाम के वर्णन पर बोलने का अवसर दिया। महोदय, भगवान महर्षि वाल्मीकि ने भरी राज सभा में प्रभु राम से कहा, हे राम, मैं ब्रह्मा के 10वें पुत्र प्रचेता का पुत्र वाल्मीकि हूं। सत्य कहता हूं कि ये दोनों पुत्र लव और कुश आपके पुत्र हैं, मैं इन्हें अस्त्र और शस्त्र से पूर्ण कर आपको सौंपता हूं। आपने संसार को जो आदर्श दिया है, वह अनंतकाल तक पृथ्वी पर रहेगा और आपकी कीर्ति पताका लहराती रहेगी। महोदय, माननीय प्रधान मंत्री मोदी जी ने यह बात सत्य साबित कर दी। मोदी जी के आचार, विचार और व्यवहार में यह बात झलकती है। मैं उनके लिए दो पंक्तियां बोलना चाहती हूं कि

"मानवता के पथ पर चलते रहना,
गरल रस (यानी यहां जो वाक्य के ज़हर मिलते हैं) पीकर आगे बढ़ते रहना,
बस चलते रहना, चलते रहना।"

महोदय, मैं एक बात कहना चाहती हूं कि जब बॉलीवुड संगीतकार, गीतकार रवींद्र जैन ने 1980 के दशक में एक गीत गाया था,

"सवा रुपैया दे-दे रे भैया, राम शिला के नाम का,
राम के घर लग जाएगा, पत्थर तेरे नाम का।"

महोदय, उन्होंने बहुत ही शानदार शब्दावली गायी थी। तब उन्होंने शायद यह कल्पना भी नहीं की होगी कि 40 वर्ष बाद राम मंदिर का निर्माण होगा और हम सब हिंदुस्तानवासी अपने-अपने घरों में हर वर्ग की आयु के, हर वर्ग के, समाज के लोग एक होकर इस राम मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर उत्सव मनाएंगे। मैं कहना चाहती हूं कि जो लोग सत्ता में रहते हुए राम के नाम को नकार रहे थे, सुप्रीम कोर्ट में आवेदन प्रस्तुत कर रहे थे कि राम तो एक काल्पनिक कहानी हैं, रामसेतु भी नहीं है, मैं कहना चाहती हूं कि देखो, समय का चक्र कैसे बदलता है। बोलने वाले आज किंकर्तव्यविमूढ़ हैं। महोदय, मैं अंत में अटल जी की दो पंक्तियां कहना चाहती हूं -

"दुनिया का इतिहास पूछता,
रोम कहाँ, यूनान कहाँ?
घर-घर में शुभ अग्नि जलाता
वह उन्नत ईरान कहाँ है?
दीप बुझे पश्चिमी गगन के,
व्याप्त हुआ बर्बर अंधियारा,
किन्तु चीर कर तम की छाती,
चमका हिन्दुस्तान हमारा।"

धन्यवाद!

MR. CHAIRMAN: Before Shri Jagat Prakash Nadda speaks, on a special request, I am allowing Shrimati Priyanka Chaturvedi to speak for two minutes. Looking at the historic occasion, I have yielded to her request.

श्रीमती प्रियंका चतुर्वेदी (महाराष्ट्र): सभापति महोदय, मैं सबसे पहले आपका आभार व्यक्त करना चाहूंगी और ज्यादा समय नहीं लूंगी। अगर शिव सेना इस ऐतिहासिक मौके पर नहीं बोलेगी, तो मैं मानती हूं कि कहीं न कहीं इस ऐतिहासिक मौके का उल्लंघन होगा। मैं इसलिए बोल रही हूं, क्योंकि मैं अपना सौभाग्य मानती हूं कि इतने महत्वपूर्ण ऐतिहासिक क्षण पर मुझे बोलने का मौका मिल रहा है। खासकर उस पार्टी से, जिसने अपना योगदान दिया है। मुझे अभी भी याद है कि जब बाला साहेब ठाकरे जी से पूछा गया था, जब बाबरी मस्जिद को लेकर 6 दिसंबर की बात हुई थी, तो उनसे पूछा गया था कि क्या उसमें आपका हाथ था? उन्होंने बाकायदा बेखौफ होकर कहा था

कि हाथ ही नहीं, हमारा पैर भी था। मुझे इस बात की हैरानी हो रही है, मैं त्रिवेदी जी को सुन रही थी, तो त्रिवेदी जी पूरा का पूरा श्रेय प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी जी को दे रहे थे।...(**व्यवधान**)... सर, यह उन लोगों का अपमान होगा, जिन्होंने 500 साल की आहुति इस महान यज्ञ में दी है, जिसकी वजह से यह प्राण-प्रतिष्ठा का मौका प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी जी को मिला है। यह उनका अपमान होगा, जो सुप्रीम कोर्ट की लड़ाई लड़े। वे साधु-संत, वे इतिहासकार, वे archeologists, जिन्होंने इसमें अपना योगदान दिया है।...(**व्यवधान**)... मुझे अभी भी याद है...(**समय की घंटी**)... मैं 30 सेकेंड और लूंगी। जब अटल बिहारी वाजपेयी जी ने कहा था कि उनसे 6 दिसंबर की यह गलती हुई थी, तब यह भी कहा गया था कि उमा भारती जी को जब कहा गया था कि इसको रोकें...(**व्यवधान**)...

MR. CHAIRMAN: Time is over. Nothing will go on record now. Now, Shri Jagat Prakash Nadda.

श्री जगत प्रकाश नड्डा (हिमाचल प्रदेश): सभापति महोदय, मैं आज रूल 176 के तहत राम जन्म भूमि के निर्माण पर और प्राण-प्रतिष्ठा पर चल रही चर्चा में भाग लेने के लिए खड़ा हुआ हूं। आपने मुझे समय दिया, उसके लिए आपका धन्यवाद करता हूं। जब हम राम जन्म भूमि और उसकी प्राण-प्रतिष्ठा की चर्चा करते हैं, तो मेरे लिए यह कोई किसी विषय पर सिर्फ बोलना ही नहीं, मैं अपने आपको सौभाग्यशाली मानता हूं कि मुझे ऐसे पवित्र विषय पर इस सदन में बोलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इस ऐतिहासिक विषय पर बोलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। यह हम सबके लिए बहुत ही गौरवशाली घड़ी है। यह गौरवशाली पल है, समय है कि हम सब लोग अपनी आंखों से रामलला को विराजमान होते हुए, उसकी प्राण-प्रतिष्ठा को अपनी आंखों से हम सबको देखने का सौभाग्य मिला है। इस ऐतिहासिक घड़ी के हम पार्ट एंड पार्सल बने, इस ऐतिहासिक घड़ी को हम सब लोगों ने अपने साथ आत्मसात किया। यह ईश्वरीय कृपा के बगैर संभव नहीं है। इसलिए हम सब लोगों को उस ईश्वर का धन्यवादी होना चाहिए, जिसने हमें यह सौभाग्य दिया कि हम इस मौके पर अपने आपको शामिल करें। 500 साल का लंबा संघर्ष, 1528 से लेकर 2023 तक कितनी पीढ़ियां बीत गईं। कितना समय बीत गया, कितना लम्बा संघर्ष चला, हम तो कहते हैं कि रामजी का वनवास 14 वर्ष का था, लेकिन रामजी का वनवास तो 500 साल का भी है। एक तरीके से उनको टेंट में रहना पड़ा, तकलीफों में रहना पड़ा और उसके बाद आज जब रामलला अपने मंदिर में, अपने महल में विराजमान होते हैं, यह हम सब के लिए एक ऐतिहासिक घड़ी और गौरवशाली दिन है। जब हम 500 साल का इतिहास बताते हैं, तो वह गुलामी भरा इतिहास है, संघर्ष भरा इतिहास है और जब हम 22 जनवरी, 2024 की बात करते हैं, तो हम उस दिन को spiritual, cultural, conscience का resurgence का दिन मानते हैं। वह आध्यात्मिक, सांस्कृतिक चेतना का पुनर्जागरण का दिन होता है, यह भी हमको ध्यान में रखना है। कोई हजार साल नहीं, कोई 10 हजार साल नहीं, सहस्त्र शताब्दियों तक इस दिन को याद रखा जाएगा, यह ऐतिहासिक दिन होगा, यह भी हमको याद रखना होगा। भगवान राम, मर्यादा पुरुषोत्तम राम इस देश की आत्मा हैं इस देश का संस्कार है इस देश की जीवन-पद्धति है और इस देश की मर्यादाओं के बारे में चर्चा करने का नाम मर्यादा पुरुषोत्तम राम है। इसको हमको समझना चाहिए।

इसके साथ-साथ हम सब लोग उनको भगवान राम की तरह, मर्यादा पुरुषोत्तम राम की तरह तो देखते ही हैं, लेकिन अपने व्यक्तिगत जीवन से लेकर सामाजिक जीवन में हमें किस तरीके से आगे बढ़ना है, इसका भी मार्ग प्रशस्त करते हैं और भगवान राम का जीवन यह करता है, यह भी हमको ध्यान में रखना चाहिए। भगवान राम सिर्फ सनातन धर्म में ही नहीं देखे जाते, अनेक धर्मों के ग्रंथों में राम विराजमान हैं, अनेक धर्मों की दृष्टि से लोगों ने राम को अपनाया है और अनेक देशों ने भी राम को अपना माना है। अगर हम गुरु ग्रंथ साहिब की बात करें, तो उसमें भी राम का उल्लेख है, अन्य धर्मों की बात करें, तो उनमें भी राम का उल्लेख मिलता है। इसके साथ-साथ अगर हम देश की दृष्टि से भी देखें, तो थाईलैंड के जो राजा हैं, उनको भी हम, The King hold of the 10th Rama कहते हैं, यह भी हमको ध्यान में रखना चाहिए। उसका टाइटल The King Rama 10th है। यह थाईलैंड में राजा को कहा जाता है, इसके नाम से सम्बोधित किया जाता है। अगर हम बात करें, तो इंडोनेशिया में, जो मुस्लिम प्रधान देश है, वहां भी रामायण प्रतिदिन ब्रॉडकास्ट होती है, वहां पर सरकारी टेलिविज़न में दिखाया जाता है, इसको भी हमें ध्यान में रखना चाहिए। इसी तरीके से साउथ कोरिया की रानी की वंशावली भी राम से प्रारम्भ होती है, यह भी हमको ध्यान में रखना चाहिए। इसलिए हम राम को संकुचित नहीं कर सकते हैं, हम संकुचित दृष्टि से राम को नहीं देख सकते हैं। हमको उसे एक विराट रूप में देखना पड़ेगा, एक जीवन-पद्धति के रूप में देखना पड़ेगा, यह हम सबको ध्यान में रखना पड़ेगा।

मैं यहां पर यह भी कहना चाहूंगा कि यह जो 500 साल का संघर्ष है, इसमें अनेक राजाओं ने संघर्ष किया है, जनता ने संघर्ष किया है, साधु-संतों ने संघर्ष किया है, हमारे निहंग भाइयों ने संघर्ष किया है और अभी का ताजा-ताजा संघर्ष, हमारे पिछले 30 साल का संघर्ष आप सभी लोगों ने देखा है। इस संघर्ष में अगर मैं 500 साल की बात करूं, तो हजारों जिंदगियां गई हैं, हजारों ने अपने आप को आहूत किया है, अगर पिछले तीस साल की हम बात करें, तो सैकड़ों लोगों ने अपने आपको आहूत किया, इस राम जन्म भूमि को, अपने रामलला को वहां विराजमान करने के लिए। सबसे पहले तो मैं अपनी ओर से, अपनी पार्टी की ओर से और मैं समझूंगा कि इस हाउस का भी यह मत होगा कि उन तमाम लोगों ने, जिन्होंने संघर्ष में अपना जीवन दिया है, उनके प्रति हम नमन करते हैं, उनको श्रद्धांजलि देते हैं, उनको श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं। जहां तक हमारी भारतीय जनता पार्टी का सवाल है, हमने वर्ष 1989 में पालमपुर के प्रस्ताव में इस बात को स्पष्ट किया था कि हम राम जन्मभूमि पर रामलला का विराट मंदिर बनने के रास्ते को प्रशस्त करेंगे। हमने ऐसा वर्ष 1989 में कहा था। उस समय लोग बोलते थे कि ये क्या बोल रहे हैं, कैसी बात कर रहे हैं। हमने कहा था कि हम अपने प्रस्ताव के माध्यम से बताते हैं कि हम राम लला के मंदिर को बनाने के लिए मार्ग को प्रशस्त करेंगे। इसको करने के लिए हम सभी लोगों ने एक तरीके से एकजुट होकर इस कार्य को आगे बढ़ाने का काम किया। यह दीगर बात है कि जब सारा देश एकजुट था, जिसका प्रमाण हमें 22 जनवरी को देखने को मिला, दुनिया एकजुट हुई, सारी दुनिया ने एक माना, तब कुछ लोगों ने अलग राग भी अलापा और उसको अलग तरीके से देखने का प्रयास भी किया। जब अलग तरीके से देखने का प्रयास किया, तो उसमें रुकावटें डालीं, रोड़ा डाला। महोदय, अटकाना, लटकाना, भटकाना, रास्ते से अलग तरीके से ले जाना - हम लोगों ने यह भी देखा है। मुझे वह समय भी याद है, उस समय मैं युवा था और युवा मोर्चा का अध्यक्ष था, उस समय हमने वे गोलियाँ भी देखीं, वे लाठियाँ भी खाईं, जेल के दर्शन भी किए, कार्यालयों की

वह बंदी भी देखी और दिल्ली में जो लोग कहते थे कि परिंदा भी नहीं फटकेगा, वहाँ आंदोलन भी देखा। हम लोगों ने वह समय भी देखा है, मैं उसका चश्मदीद गवाह हूं। इसलिए सभापति महोदय, जब मैं खड़ा होकर इस पर बोल रहा हूं, तो मुझे इतनी खुशी हो रही है कि जिसके लिए मैं यह कह रहा हूं कि मेरे रोंगटे खड़े हो रहे हैं, क्योंकि मैंने वह जो संघर्ष का काल था, उसको देखा है।

सभापति महोदय, हमने अटल जी का वक्तव्य देखा, हमने आडवाणी जी का संघर्ष देखा, जब लाठियां चार्ज हुईं, तो हमने वे भी देखीं, हमने साधु संतों का संघर्ष देखा, लेकिन वही भला, जो अंत भला। वह अंत भला हुआ और हम एक लंबी प्रक्रिया के बाद इस कार्य को कर सके हैं।

सभापति महोदय, मैं यहां पर यह कहना चाहूंगा कि सनातन धर्म ने और देश ने अपने धैर्य का भी पूरा परिचय दिया है। अनेक विपदाएं आईं, अनेक समस्याएं आईं, हर तरीके की मुसीबतें आईं, लेकिन जिस प्रकार मर्यादा पुरुषोत्तम राम थे, उसी तरीके से तमाम मर्यादाओं को रखते हुए रामलला को विराजमान करने का काम भारत के लोगों ने धैर्य के साथ किया और भारतीय जनता पार्टी ने उसमें अपना योगदान दिया।

सभापति महोदय, मुझे इस बात की भी खुशी है कि इसकी प्राण प्रतिष्ठा हमारे सम्माननीय भारत के यशस्वी प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के कर कमलों द्वारा हुई है। यह हम सबके लिए गौरव का विषय है। यह सबसे उचित घटना घटी, जब भारत का प्रधान सेवक, भारत का प्रधान प्रशासक, जो सांसारिक होने के बावजूद भी सारे यम- नियमों को मानता हुआ, एक संन्यासी का जीवन जीता हुआ प्राण प्रतिष्ठा करता है, तो यह हम सबके लिए गौरव का विषय है। जब उनके कर कमलों द्वारा प्राण प्रतिष्ठा होती है, तो मुझे वह समय भी याद आता है - महोदय, देखिए काल कैसे बदलता है, समय कैसे बदलता है और विचार भी कैसे बदलते हैं। एक वह समय था, जब एक प्रधान मंत्री सोमनाथ की प्राण प्रतिष्ठा में जाना अपनी ग्लानि समझते थे और एक यह समय भी आया, जब रघुनाथ की प्राण प्रतिष्ठा के लिए भारत के यशस्वी प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने अपने कर कमलों द्वारा कार्य को संपन्न किया।

सभापति महोदय, उनके बराबर का उचित व्यक्ति, प्रधान प्रशासक, प्रधान सेवक और उसके साथ-साथ पूरे यम-नियम - सांसारिक व्यक्ति रहते हुए भी एक संन्यासी का जीवन जीते हुए अपना कर्म कर रहा है। गोविंद गिरी जी महाराज ने अपने वक्तव्य में इस बात को कहा भी है। उन्होंने कहा है कि यम तो तीन दिन का था, लेकिन प्रधान मंत्री जी ने ग्यारह दिन का कठोर यम करने के बाद इस कार्य को पूर्ण किया। 11 दिनों तक जमीन पर सोना, नारियल पानी का सेवन करना, अनेक स्थान जो श्रीराम के जीवन से संबंधित स्थान थे, वहां जाना, चाहे वह गिलहरी का स्थान था या अन्य स्थान थे, सभी पूज्य स्थानों पर आदरणीय प्रधान मंत्री जी का जाना, 11 दिन का तप करना और उसके बाद अपने कर-कमलों द्वारा उस रामलाल की प्राण प्रतिष्ठा करना, यह अपने आप में एक बहुत ऐतिहासिक समय और दिन को देखने का विषय बनता है, जिसे हमें ध्यान में रखना चाहिए।

मैं यहां यह भी कहना चाहूंगा कि यह भारत के लिए, हम सबके लिए और भारतीय जनता पार्टी के लिए राजनैतिक मुद्दा नहीं है। यह देश का मुद्दा है और हमने कभी इसमें से कोई स्कोर लेने की कोशिश नहीं की है। हमने इसमें से कोई पोलिटिकल एडवांटेज लेने की कोशिश नहीं की है। मुझे याद है जब मैं युवा था, जब इस राज्य सभा में कुछ सदस्य होते थे और लोक सभा में हम दो थे, तब भी हम राम के लिए स्ट्रगल कर रहे थे और आज 303 हैं, तब भी हम राम के लिए स्ट्रगल

कर रहे हैं। हमने वे दिन भी देखे हैं। फिर चाहे कोर्ट का वर्डिक्ट हुआ, पहले हाई कोर्ट और फिर सुप्रीम कोर्ट का हुआ और पांच जजों के द्वारा एकमत से फैसला हुआ। सभी लोगों ने फैसला किया। उसके बाद शिलान्यास हुआ। आदरणीय प्रधान मंत्री जी ने शिलान्यास किया। फिर प्राण प्रतिष्ठा हुई। किसी भी ओकेज़न पर, किसी भी समय पर कोई भी राजनैतिक वक्तव्य भारतीय जनता पार्टी ने नहीं दिया। हमने यह देश की अस्मिता को संभालकर किया है। We never gave a political statement. We never tried to take political advantage out of it. It was our conviction, it was our commitment. उस कमिटमेंट को पूरा करने के लिए हम लोगों ने हर तरीके से प्रयास किया और कभी भी हमने उसमें राजनीति नहीं की, किसी भी तरह का राजनीतिक बयान नहीं दिया। हमने इसकी परिकल्पना को पूरा किया है।

जब मैं राम राज्य की बात करता हूं, तो संविधान में भी भारत रत्न डा. भीमराव अम्बेडकर ने राम को अंकित किया है। हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी ने भी राम राज्य की कल्पना की है और राम राज्य की कल्पना करने में हम लोगों ने हमेशा इस बात की चर्चा की है कि हम किस तरीके से गरीब लोगों की चिंता कर सकें और उनके बारे में सोच सकें। हम उनकी चिंता कर सकें, यह हमारे लिए आवश्यक है। आज मैं यह गौरव और गर्व के साथ कह सकता हूं कि प्रधान मंत्री मोदी जी के नेतृत्व में आज इस देश में शासन चल रहा है, तो हम राम राज्य की कल्पना को साकार करने के लिए लगे हैं और उसको आगे बढ़ा रहे हैं। मैं यह सिर्फ कहने के लिए नहीं कह रहा हूं। यह गांव, गरीब, वंचित, पीड़ित, शोषित, दलित, महिला, युवा, किसान - इन सबके सशक्तिकरण का, इन सबको ताकत देने का काम आदरणीय प्रधान मंत्री जी के नेतृत्व में उनकी नीतियों और उनके कार्यक्रमों ने किया है - उसको अमली जामा पहनाया है, उसको ताकत दी है। हमने सभी जातियों को जोड़ने का प्रयास किया, तोड़ने का प्रयास नहीं किया। हमने सबको साथ लेकर चलने की बात की - 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास, सबका प्रयास।'

यदि मैं उज्ज्वला की बात करूं, तो क्या उसका लाभ किसी धर्म के लोगों को मिल रहा है, क्या किसी जाति के लोगों को मिल रहा है, क्या किसी जाति की महिलाओं को मिल रहा है, क्या किसी वर्ग को मिल रहा है? वह सबके साथ और सबके विकास की स्पिरिट है, यह हमें समझना चाहिए। 'उजाला योजना', 'सौभाग्य योजना' - कभी हम लोगों ने 'सौभाग्य योजना' में उन ढाई करोड़ घरों को देखा है कि वे किस जाति के हैं? वह 'उजाला योजना' - हमने कभी सोचा है कि यह 18 हज़ार गांव किन जातियों के गांव हैं? यह हमने कभी नहीं सोचा है। सबके विकास के लिए, सबको आगे बढ़ाने के लिए उस काम को आगे बढ़ाने का काम किया है। 'प्रधान मंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना', अब जब मैं 'प्रधान मंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना' बोलता हूं, तो जो वह 80 करोड़ की जनता है, क्या वह किसी जाति की है, क्या वह किसी धर्म की है? सभी जातियों के लोग, सभी धर्मों के लोग, सभी वर्गों के लोग, जो गरीब हैं, उनकी चिंता की गई है। प्रधान मंत्री मोदी जी ने इस तरह से राम राज्य की कल्पना को साकार किया है। आपको जान कर खुशी होगी कि आज 25 करोड़ लोग इसी प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना के कारण गरीबी की रेखा से ऊपर उठ चुके हैं, उनको उसमें से निकलने का मौका मिला है।

अब मैं प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि की बात बताऊँगा। किसानों की बात तो बहुत लोगों ने की, लेकिन कब किसान की चिंता हुई! आज हर चौथे महीने किसान के घर पर उसके बैंक अकाउंट में 2,000 रुपए जमा होते हैं। यह संख्या कितनी है? 11 करोड़, 78 लाख किसानों के

अकाउंट में ये रुपए जमा होते हैं। लगभग 2.5 लाख करोड़ रुपए से ज्यादा किसानों के खातों में जा चुके हैं। यह किसान की चिंता हुई।

इसी तरह से स्वच्छता अभियान है। मुझे याद है कि राम मनोहर लोहिया जी बोला करते थे कि मुझे शर्म आती है, जब मेरी जीप चलती है, तो उसके आगे मैं नेशनल हाईवे पर देखता हूँ कि झुंड की झुंड महिलाएँ लोटा लेकर अपने दैनिक नित्यकर्म के लिए जाती हैं। यह उन्होंने 1966 में कहा था। किसी ने चिंता नहीं की! जब लाल किले की प्राचीर से प्रधान मंत्री जी ने स्वच्छता अभियान की चर्चा की, तो लोगों ने खिल्ली उड़ाई, लेकिन उसी स्वच्छता अभियान ने आज 12 करोड़ बहनों को इज्जत घर दिया है, life with dignity दी है और महिलाओं का सशक्तिकरण हुआ है। हमने महिलाओं को मुख्य धारा में लाने का काम किया है। इसमें सिर्फ महिलाएँ ही नहीं आईं, महिलाओं के साथ 12 करोड़ बच्चे भी आए, 12 करोड़ परिवार भी आए, life with dignity, जीने का अधिकार उनको मिला, यह भी हमको ध्यान में रखना चाहिए।

यहाँ जब मैं राम राज्य की कल्पना की बात करता हूँ और जब मैं बोलता हूँ कि सभी गरीब की चिंता होनी चाहिए, तो सभी लोगों की चिंता होनी चाहिए। यहाँ बहुत से मेंबर्स ऑफ पार्लियामेंट बैठे हैं, कभी ये एमएलए रहे होंगे। हम लोगों में से भी बहुत से लोग एमएलए रहे होंगे। हम क्या चिट्ठी लिखा करते थे! सभापति महोदय, आप भी लंबे समय तक सांसद रहे। उन दिनों हम चिट्ठी लिखते थे कि प्रधान मंत्री जी, इस व्यक्ति के हार्ट का ऑपरेशन होना है, इसमें सवा लाख रुपए खर्च होने हैं, यह बहुत गरीब परिवार का है, इसकी आर्थिक सहायता की कोई व्यवस्था नहीं है, आप अपने प्रधान मंत्री राहत कोष से इसको 1.5 लाख रुपए देने की कृपा करें, अनुशंसा करें। ये चिट्ठियाँ हम लिखा करते थे। 10 चिट्ठियाँ लिखते थे, 12 चिट्ठियाँ लिखते थे, तो दो के लिए सैंक्शन होता था, 10 रह जाते थे, मालूम नहीं क्या होता था। लेकिन प्रधान मंत्री, मोदी जी ने कहा कि हमें कुछ बड़ा सोचना है। आज मुझे खुशी होती है कि 10 करोड़ 74 लाख परिवार, 55 करोड़ लोग, जो भारत की आबादी का 40 प्रतिशत बनता है, 40 per cent of Indian population, इनके 5 लाख रुपए की हर साल, सालाना गंभीर बीमारियों से लड़ने के लिए, इलाज करने के लिए आज व्यवस्था की गई है। कभी सोचा था आयुष्मान भारत! कौन लोग हैं ये! मैं बार-बार बोलता हूँ, ये गरीब लोग हैं। रेहड़ी वाला, फेरी वाला, रिक्शा वाला, ठेला वाला, सब्जी वाला, बस का ड्राइवर, बस का कंडक्टर, लिफ्ट मैन, क्लीनर, बाल काटने वाला, जूते का काम करने वाला, ऐसे गरीब लोग बेचारे, जो अपनी गंभीर बीमारी का इलाज नहीं करा सकते थे, उनको आयुष्मान भारत में लाने का काम प्रधान मंत्री, मोदी जी ने किया और वह भी हम सबके ध्यान में है।

इसी तरह से हर घर जल है। यह क्या एक तरीके से हम लोगों ने नई आजादी नहीं देखी? आप सब लोगों में बहुत से लोग शहर के रहने वाले होंगे। आप लोगों को शायद इसका एहसास नहीं होगा, लेकिन मैं तो पहाड़ी प्रदेश से आता हूँ। वैसे तो महाराष्ट्र के भी बहुत से सूखे इलाके आपने देखे होंगे, गुजरात में भी देखे होंगे, बाकी सब जगह भी देखे होंगे, आपने राजस्थान में भी देखा होगा, आपने अन्य क्षेत्रों में भी देखा होगा, लेकिन मेरे पहाड़ी इलाके में बहनें दो-दो किलोमीटर पहाड़ से उतर कर नीचे आती थीं और एक घैला पानी लेकर फिर 3 किलोमीटर, 2 किलोमीटर ऊपर चढ़ती थीं और दिन का गुजारा करती थीं। यह भी जमाना हमने देखा है। मुझे खुशी होती है कि आज हर घर नल, हर घर जल, यह पहुँचाने का निर्णय लेकर इसको भी पूरा करने का काम किया गया है। ...(**व्यवधान**)... क्यों आपको घंटी की बहुत जल्दी हो रही है? अच्छी

बात सुनने के लिए थोड़ा सा समय दे दीजिएगा, अच्छा रहेगा। मैं तो सबको शांति से सुनता हूँ। ...(**व्यवधान**)... नहीं, वह समय पर बजती है, हमारी पार्टी का टाइम है, हम जानते हैं। वैसे बहुतों की घंटी हम बजा चुके हैं। महोदय, जहाँ तक नारी शक्ति वंदन अधिनियम की बात है, this Parliament waited for 30 years, and it is under Prime Minister, Shri Narendra Modi, that within three days नारी शक्ति वंदन विधेयक पास हो गया और नारियों को वह शक्ति मिल गई, यह भी हमने देखा।

महोदय, अगर मैं किसान की बात करूँ, fertilizers की बात करूँ, तो किसी के ध्यान में ही नहीं था कि neem-coated Urea के माध्यम से हम किसानों को ताकत दे सकते हैं। अब तो हम nano-fertilizer की तरफ जा रहे हैं, जहाँ एक बोरी की जगह पर एक छोटी सी बोतल में वह फर्टिलाइजर आयेगा। हम एक क्रांति की तरफ आगे बढ़ रहे हैं। यहाँ जन-धन योजना का मजाक उड़ाया गया। मैं यहाँ on record यह बात लाना चाहता हूँ कि Mrs. Gandhi brought nationalization of banks in 1971-72 और कहा था कि गरीबी की चिन्ता होगी, गरीबों की चिन्ता होगी और बैंक के दरवाजे गरीबों के लिए खुले रहेंगे। मैं यहाँ on record यह बात रखना चाहता हूँ। 1971 से लेकर 2014 तक बैंक के दरवाजे की चौखट को क्रॉस करने वालों की संख्या पौने 3 करोड़ थी, सिर्फ पौने 3 करोड़। Madam Nirmala Sitharaman*ji* may correct me, आज 50 करोड़ से ज्यादा गरीब लोगों के बैंक के खाते खुले हैं। आज यह परिस्थिति है। यह इस बात को बताता है कि इन जन-धन खातों के माध्यम से हमारी 25 करोड़ बहनों को कोरोना के टाइम में 500-500 रुपया उनके घरों में, उनके खातों में पहुँचा। Unimaginable! हम लोगों ने वह भी देखा। उसी तरीके से श्रमिक लॉज़ की दृष्टि से जो कल्याण हुआ है, उसको भी हमने देखा है। अनेक स्कीम्स के माध्यम से सारी चीजें हमारे सामने आयी हैं। जब मैं 'राम राज्य' की कल्पना की बात करता हूँ, तो मैं एक और बात on record लाना चाहता हूँ। हमारे विपक्ष के बहुत से विद्वान नेतागण भी यहाँ बैठे हैं, सब लोग बैठे हैं। कोरोना के टाइम में दुनिया के देशों ने अपने आपको असहज और असहाय समझा और देखा, लेकिन हमारा भारत अकेला ऐसा देश था, जिसने प्रधान मंत्री मोदी जी के नेतृत्व में decisive decision लेकर इस देश को कोरोना से बचाने का काम किया। West could not decide whether economy is important or humanity is important ; West could not decide. In the East, Japan and other countries, even Australia, could not decide. But India could decide. हमारे प्रधान मंत्री जी ने कहा कि 'जान है, तो जहान है' और इसीलिए समय पर लॉकडाउन लगाया, देश को तैयार किया। जब देश तैयार हो गया, तो हमारे प्रधान मंत्री जी ने कहा कि 'जान भी है और जहान भी है। अब दोनों की चिन्ता करनी है।'

महोदय, मुझे स्वास्थ्य मंत्री रहने का सौभाग्य मिला है। मुझे मालूम है कि इस देश में National Pulse Polio Programme बनने में 26-27 साल लग गए, Tuberculosis के लिए प्रोग्राम बनने में 28 साल लग गए, Japanese Encephalitis का इंजेक्शन आने में 100 साल लग गए। जापान में 1906 में उसका इंजेक्शन आ गया था, लेकिन भारत में वह 2006 में पहुँचा और 2014 में उसके लिए National Programme बना। यहाँ यह स्थिति आकर खड़ी रही। लेकिन जब कोरोना आया, तो 9 महीने के अन्दर प्रधान मंत्री जी ने इस देश को एक नहीं, बल्कि दो-दो वैक्सींस दीं और डबल डोज़ के साथ बूस्टर लगा कर 220 करोड़ लोगों को उस दृष्टि से सुरक्षित किया गया।

सभापति महोदय, मैं ये सारी बातें इसलिए कहना चाहता हूँ, क्योंकि हम 'राम राज्य' की कल्पना को लेकर चले हैं। धारा 370 के बारे में किसी ने कहा था कि यह घिस-घिस कर घिस जाएगी, लेकिन उनकी राजनीति घिस गयी, परन्तु धारा 370 नहीं घिसी। उसको घिसने के लिए आदरणीय प्रधान मंत्री मोदी जी की इच्छा शक्ति लगी, तब जाकर धारा 370 गयी। उसी तरीके से ट्रिपल तलाक का मामला है। सुप्रीम कोर्ट ने कहा था - हमारे सामने शाह बानो का केस भी है। आज हम 'राम राज्य' की तरफ आगे बढ़ते हैं, तो हमें दिखता है कि ट्रिपल तलाक वाले अधिनियम से हमारी मुस्लिम बहनों को भी आज़ादी के साथ जीने का अधिकार मिला है। इस बात को भी हम ध्यान में रखना चाहते हैं।

सभापति जी, मैं आपका ज्यादा समय लेना नहीं चाहता। मैं सिर्फ इतना ही कहना चाहता हूँ कि यह एक ऐतिहासिक पल है, जब रामलला विराजे हैं। यह जो spiritual conscience का resurgence हुआ है, यह जो cultural conscience का resurgence हुआ है और यह जो आध्यात्मिक चेतना का resurgence हुआ है, इस 22 जनवरी को सदा-सदा याद किया जाएगा। इसमें हम सब को प्रधान मंत्री मोदी जी की इच्छाशक्ति और दृढ़शक्ति का भी परिचय मिलेगा, यह मैं कहना चाहूँगा। आज खुशी की घड़ी है। मैं एक बात जरूर कहना चाहूँगा कि हमें फैसला करना चाहिए। अब कई बार लोगों से बोलते हैं, तुमने 22 जनवरी को बीजेपी इवेंट बना दिया, बीजेपी इवेंट बना दिया। मैं पूछता हूँ कि मैं भारतीय जनता पार्टी का राष्ट्रीय अध्यक्ष हूँ, मैं भी उस कार्यक्रम में कहाँ था? वहाँ बीजेपी का कौन था? वहाँ भारत के प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी जी थे। वे तो भारत के प्रधान मंत्री हैं। वह काम तो न्यास ने किया है। It was not a BJP event. लेकिन हाँ, अगर किसी का कर्म उसको कचोटे और वह उसमें शामिल होने से रह जाए, तो मैं क्या करूँ, हम क्या कर सकते हैं? इस दुविधा के बारे में हमें सोचना चाहिए।

महोदय, मैं अन्त में अपनी बात को समाप्त करने से पहले कहूँगा :

"राम नाम कड़वा लगे, मीठे लगे दाम
दुविधा में दोनों गये, माया मिली न राम।"

ज़ोर से बोलो - जय सियाराम।

MR. CHAIRMAN: Now, the Leader of the House.

सभा के नेता (श्री पीयूष गोयल): माननीय सभापति महोदय, वास्तव में हमारे राष्ट्रीय अध्यक्ष माननीय जगत प्रकाश नड्डा जी के इतने ओजस्वी उद्बोधन के बाद, मैं समझता हूँ कि यह पूरा सदन इस बात पर सहमत होगा कि पूरा देश, 140 करोड़ देशवासी आज प्रसन्न हैं कि भारत की आस्था, भारत की अस्मिता आज किस प्रकार से जाग्रत हुई है। जिस दिन प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने 140 करोड़ भारतवासियों की उम्मीदों को पूरा करते हुए उस सुन्दर मूर्ति की प्राण-प्रतिष्ठा की, उस दिन पूरे देश में हर्ष और उल्लास का माहौल रहा।

महोदय, मैं आपके माध्यम से सदन के सामने एक बात जरूर रखना चाहता हूँ। माननीय प्रधान मंत्री जी ने कहा है कि इस ऐतिहासिक अवसर ने आने वाली कई सदियों के लिए भारत में

हमारी परम्पराओं के पुनर्जागरण और 'विकसित भारत' की नींव को सशक्त किया है। माननीय प्रधान मंत्री जी ने यह भी कहा कि राम से राष्ट्र और देव से देश तक हमारे लिए अपनी चेतना को विस्तार देना जरूरी है। मैं समझता हूँ कि प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी जी की 2047 तक भारत को जो एक 'विकसित भारत' बनाने की कल्पना है, जो उनकी दूरदृष्टि और सोच है, विचार है, जिसके लिए इस अमृतकाल में बड़ी-बड़ी योजनाओं के साथ बड़े-बड़े कार्यक्रमों को धरातल पर उतारा जा रहा है, उससे मेरा पूरा विश्वास है कि भारत आने वाले अमृतकाल में अमृत पीढ़ी के भरोसे, अमृत पीढ़ी के बलबूते पर एक विकसित भारत, एक समृद्ध भारत बनेगा।

महोदय, मैं इस सदन का ध्यान एक विषय की ओर जरूर आकर्षित करना चाहूँगा। राम जन्मभूमि के आन्दोलन का अगर हम इतिहास देखें, तो इस इतिहास में राजाओं ने, संतों ने, निहंगों ने, अलग-अलग संगठनों ने और कानून के विशेषज्ञों ने भी लगातार संघर्ष किया। यह एक जाति या एक संगठन या एक मान्यता या एक क्षेत्र की लड़ाई नहीं थी, इसमें कई लोगों और संगठनों ने गिलहरी के समान अपना-अपना योगदान भी दिया और वीर वानरों के समान अपनी जान भी गँवाई। क्या उत्तर, क्या दक्षिण, क्या पूरब, क्या पश्चिम, देश के कोने-कोने के लोगों ने इस आन्दोलन में अपनी भूमिका निभायी है।

6.00 P.M.

माननीय सभापति जी, वर्ष 1990 में जब इस आन्दोलन ने गति पकड़ी, तब इसमें जितना योगदान श्री मुथुस्वामी जी का था, उतना ही योगदान बिहार के संजय कुमार सिंह का था। इसमें दक्षिण के पेजावर मठ के श्री विश्वेश तीर्थ स्वामी का उतना ही योगदान था, जितना राजस्थान के प्रो. महेन्द्र नाथ अरोड़ा का था। महोदय, इसमें कांची पीठ के सरस्वती स्वामी जी ने उतना ही योगदान दिया, जितना निहंग सिख भाई-बहनों ने दिया।

माननीय सभापति जी, इस आन्दोलन में मन्दिर के ढाँचे की उपस्थिति को दृढ़ता से बताने वाले आर्कियोलॉजिस्ट, डा. के.के. मुहम्मद का भी उतना ही योगदान है, जितना डा. के.वी. रमन का है। श्री षणमुगनाथन ने राम मन्दिर के संदेश को तमिलनाडु के गाँव-गाँव तक साइकिल से पहुँचाया। वास्तव में, राम मन्दिर आन्दोलन ने देश को एक करने का कार्य किया। कार सेवकों ने भी इसके लिए जो संघर्ष किया, उसको भुलाया नहीं जा सकता है। इस आन्दोलन में प्रधान मंत्री, नरेन्द्र मोदी जी का जो अद्भुत योगदान रहा, उसकी तरफ भी सदन का ध्यान मैं आपके माध्यम से आकर्षित कराना चाहता हूँ कि कैसे दशकों पहले मोदी जी ने यह संकल्प लिया था कि राम मन्दिर राम जन्मभूमि स्थल पर ही बनना चाहिए और वह वहीं बनाया जाएगा, जहां राम का जन्म हुआ था।

MR. CHAIRMAN: The time of sitting of the House is extended till we conclude the present listed Business.

श्री पीयूष गोयलः माननीय सभापति जी, माननीय प्रधान मंत्री मोदी जी ने यह संकल्प लिया था कि राम मंदिर राम जन्मभूमि स्थल पर ही बनाया जाएगा, जहां राम का जन्म हुआ था और राम मंदिर बनने से दुनिया की कोई ताकत नहीं रोक सकती। माननीय प्रधान मंत्री जी ने गुजरात की लोक

अदालत में 'My Ayodhya' कार्यक्रम में जो यह संकल्प लिया था, उसे सिद्धि तक पहुंचाने का काम भी माननीय प्रधान मंत्री जी ने किया।

माननीय सभापति जी, 1970 के दशक में जब राम जन्मभूमि की बात न तो दिल्ली दरबार में थी और न ही किसी को इस आन्दोलन के बारे में बहुत ज्यादा जानकारी थी और जब सड़कों पर इसकी चर्चा पर प्रशासन की कड़ी नज़र रहती थी, तब उन्होंने लोगों को राम जन्मभूमि के बारे में जगाना शुरू किया था। राम जन्मभूमि पर दिए गए उनके भाषण इतने लोकप्रिय हुए कि उनकी ऑडियो कैसेट्स बनाई गईं, जिन्हें लोग चाव से सुनने लगे और वे उन्हें बार-बार सुनना चाहते थे। उन्होंने जन-जागरण के लिए घर-घर की यात्राएँ भी कीं। वर्ष 1989 में माननीय प्रधान मंत्री, नरेन्द्र मोदी जी ने रामशिला पूजन के कार्यक्रम को भी दिशा दी, जिसमें लोगों ने मंदिर निर्माण के लिए पत्थरों और ईंटों को दान में दिया था। इस तरह, वे गोस्वामी तुलसीदास के कथन, *"राम काज करिबे को आतुर"* को बीजमंत्र बनाकर चलते रहे।

माननीय सभापति जी, जीवन में प्रेरक प्रतीकों का बहुत महत्व है और यह शिला इस आन्दोलन की प्रेरक प्रतीक बन गई, जब शिलान्यास का कार्यक्रम हुआ। प्रधान मंत्री, नरेन्द्र मोदी जी ने माननीय लालकृष्ण आडवाणी जी के सोमनाथ से लेकर अयोध्या तक की रथयात्रा का भी आयोजन किया और जब सोमनाथ से अयोध्या तक की यात्रा निकली तो उन्होंने एक सारथी के नाते देश भर में यह जागृति पैदा की। हमारे धर्म ग्रंथों ने जो सिखाया है कि रथ में सारथी कितना महत्वपूर्ण होता है, वह काम माननीय प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी जी ने आडवाणी जी के साथ किया। भगवान श्री राम को एक छोटे से टेंट में देख कर वे बहुत भावुक होते थे। यह माननीय प्रधान मंत्री जी की स्वयं की संवेदनशीलता दर्शाता है। उन्होंने जब भगवान राम को टेंट में देखा, तब यह संकल्प लिया कि अब अयोध्या तभी लौटूंगा, जब मंदिर का निर्माण हो रहा होगा। वास्तव में इतने वर्षों तक प्रधान मंत्री जी ने इस संकल्प को अपने जीवन में उतारा, वे तभी गए, जब सुप्रीम कोर्ट का आदेश आया। सुप्रीम कोर्ट ने रास्ता खोला कि वहां एक भव्य राम मंदिर बन सकता है। उन्होंने अपने संकल्प को पूरा करने तक, राम मंदिर के पक्ष में सर्वोच्च न्यायालय ने जो निर्णय आने तक की कार्यवाही की, उसमें भी समय-समय पर हम सबको मार्गदर्शन दिया। जैसे ही सुप्रीम कोर्ट का निर्णय आया, माननीय प्रधान मंत्री जी ने अयोध्या जाकर वहां भूमिपूजन का कार्यक्रम किया। राम मंदिर के समर्थन में चले हस्ताक्षर अभियान में प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में 10 करोड़ हस्ताक्षर किए गए थे। राम मंदिर के समर्थन में प्रधान मंत्री जी को देश भर से 10 करोड़ हस्ताक्षर पेश किए गए। वर्ष 1998 में मॉरीशस के अंतर्राष्ट्रीय रामायण सम्मेलन में जब माननीय प्रधान मंत्री जी पार्टी के एक कार्यकर्ता के रूप में भाग लेने गए थे, तब उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय समुदाय के बीच भी इस आंदोलन की जानकारियां दीं और इसे प्रसिद्धि दिलाई। वर्ष 2014 में जब उनके नेतृत्व में भाजपा ने प्रचण्ड जीत हासिल की और पूर्ण बहुमत की सरकार स्थापित हुई, तब भी भाजपा के संकल्प पत्र में राम मंदिर देने की कल्पना और पक्का विचार रखा गया। मैं समझता हूं कि माननीय प्रधान मंत्री जी जो संकल्प करते हैं, उसको सिद्धि तक पहुंचाते हैं। यह हम सबने वर्षों तक अनुभूति की है। सर्वोच्च अदालत में जब वर्ष 2018-19 में इस पर कार्यवाही चल रही थी, तब भी माननीय प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने विभिन्न भाषणों में डेढ़ लाख दस्तावेज़ों का अनुवाद करवाया और कोर्ट के समक्ष रखवा कर कोर्ट के निर्णय में एक अहम भूमिका निभाई। हम 22 जनवरी, 2024 को एक ऐतिहासिक दिन मानते हैं, जब माननीय प्रधान मंत्री जी ने देश में एकता, शांति और सद्भाव

के प्रतीक के रूप में अयोध्या में एक भव्य राम मंदिर बनवाया और एक प्रकार से प्रभु श्रीराम का जो दूसरा वनवास था, उसको समाप्त करने का काम किया। जब 140 करोड़ देशवासी एकजुट हुए और 22 जनवरी को उन 140 करोड़ देशवासियों ने एक स्वर में देश भर में जश्न मनाया, वह एक अद्भुत नज़ारा था।

माननीय सभापति महोदय, मुझे मुम्बई के प्रसिद्ध सिद्धि विनायक मंदिर में दर्शन करने का और वहां प्राण प्रतिष्ठा देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मुझे लगा कि जैसे गणेश भगवान भी इतने प्रसन्न हो रहे हैं कि उनकी मूर्ति का तेज भी उस दिन कुछ अलग ही आकार दिखा रहा था। उसके बाद जब शाम को महाराष्ट्र के मुख्य मंत्री एकनाथ शिंदे जी और मैं पूरे क्षेत्र में घूमे और लोगों के बीच में जब यह जश्न मनाया जा रहा था, तब हमने महसूस किया कि कैसे सड़कों पर उतर कर हरेक व्यक्ति ने माननीय मुख्य मंत्री जी को और हमें बार-बार यह बात कही कि माननीय प्रधान मंत्री जी को हमारा धन्यवाद पहुंचाना, कई बुजुर्ग कहते थे कि हमारा आशीर्वाद पहुंचाना कि उन्होंने प्रभु की सेवा के लिए इतना अच्छा काम किया, दिव्य काम किया और देश सेवा का काम किया। मैं समझता हूं कि एक प्रकार से जैसे माननीय महोदय ने कहा कि उस दिन भारत का गौरवशाली इतिहास पुनः जाग्रत हुआ और भारत की प्राचीन सभ्यता पूरे विश्व ने इस राम मंदिर के माध्यम से देखी। प्रधान मंत्री मोदी जी जो गारंटी देते हैं, जो कहते हैं, उसमें प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी जी कभी चूकते नहीं हैं। मैं समझता हूं कि राम मंदिर के निर्माण में भी माननीय प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने देश को जो विश्वास दिलाया था, देश को जो कहा था, वह करके दिखाया और आज यह पूरे देश के लिए बहुत गर्व और खुशी की बात है। माननीय प्रधान मंत्री जी ने हम सबको संदेशा दिया था और मैं उनको क्वोट करने की आपसे अनुमति मांगता हूं। प्रधान मंत्री जी ने कहा था- "This is not just a temple. This is a temple of India's vision, philosophy and direction. This is a temple of national consciousness in the form of Ram." वास्तव में यह जो मंदिर है, जो माननीय प्रधान मंत्री जी ने 11 दिन के कठोर अनुष्ठान के बाद बनाया, यह मंदिर भारत के लोकतंत्र को मजबूत करता है, भारत के लोकतंत्र की भावना उजागर करता है। पुनः एक बार हमारी विरासत को उजागर करता है और देश के 140 करोड़ लोगों में राष्ट्रीय चेतना जाग्रत करता है। यह जो मंदिर है, यह भारत की विकास यात्रा का भी प्रतीक है और भारत की विरासत का भी एक तीर्थ स्थान है। यह जो वैश्विक मंदिर, वैश्विक तीर्थ स्थान बना है, यह भारत की आगे आने वाली पीढ़ियों को, भारत के उज्ज्वल भविष्य के लिए अपने आपको कृतृत्ववान बनाने के लिए और ताकत देगा ,लेकिन साथ ही साथ जैसे माननीय प्रधान मंत्री जी ने पांच प्रण में उजागर किया कि पुरानी सोच, जो गुलामी की मानसिकता है और जो गुलामी के चिन्ह हैं, उनको भी समाप्त करने का यह भव्य राम मंदिर एक प्रकार से प्रतीक के रूप में आज देश के समक्ष है।

सभापति महोदय, यह जो राम मंदिर का निर्माण हुआ है, वह आर्थिक प्रगति को भी और उजागर करेगा। मैं बता सकता हूं कि जब से इस मंदिर की प्राण-प्रतिष्ठा माननीय प्रधान मंत्री जी ने की, तो चंद ही दिनों में हमने देखा कि लाखों श्रद्धालु, लाखों की संख्या में रोज वहां पर प्रभु श्रीराम के दर्शन करने के लिए जा रहे हैं। अगर पिछले दो वर्षों के आंकड़े देखें, 2022 से अब तक, जब लोगों के बीच में यह उत्साह जगा कि हमने अयोध्या जाना है, तो 2,40,000,00 श्रद्धालु सिर्फ दो साल में अयोध्या गए। हम देख सकते हैं कि किस प्रकार का देश में उत्साह है और हाल में जो प्राण-प्रतिष्ठा हुई है, उसके बाद अब तक 22 जनवरी से लेकर कल तक बीस लाख के करीब

श्रद्धालु और भावना से जुड़े हुए राम भक्त अयोध्या होकर आए हैं। मैं समझता हूं कि जिस प्रकार से अयोध्या एक नई स्मार्ट-सिटी के रूप में उभर रही है, इतना बढ़िया रेलवे स्टेशन हमारे रेल मंत्री श्री अश्वनी वैष्णव जी ने वहां पर बनाया है। जो राम मंदिर को भी एक प्रकार से दर्शाता है। बाल्मीकि के नाम पर महर्षि बाल्मीकि एयरपोर्ट, जो हमारे सिविल एविएशन मिनिस्टर ज्योतिरादित्य सिंधिया जी हैं, उन्होंने वहां पर बनवाया है। यह एक वैदिक शहर है, जो वेदों को उजागर करता है, वेदों की याद दिलाता है, ऐसा शहर अब वहां पर बसा है। प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने इस शहर का जो विद्युतीकरण है, जो बिजली की जरूरतें हैं, उसको भी सूर्यदेव के माध्यम से पूरा करने का निर्णय लिया है। सोलर पावर से वहां पर बिजली पैदा होगी, इसके लिए दुनिया की सबसे बड़ी सोलर स्ट्रीट लाइट्स लेन अयोध्या में बन रही है। एक प्रकार से कई बार छोटे इरादे बड़े इरादों को उजागर करते हैं। माननीय प्रधान मंत्री जी ने उसी दिन फैसला किया कि शुरुआती दौर में एक करोड़ गरीब परिवारों को सूर्य से बनी ऊर्जा उपलब्ध करवाई जाएगी और सौर ऊर्जा से उनके घरों में उजाला किया जाएगा। उससे वे बिजली बनाएंगे, उनकी बिजली भी मुफ्त हो जाएगी और वे आगे चलकर ग्रिड को बिजली बेचकर अपनी आमदनी को बढ़ा सकेंगे, इसके लिए एक करोड़ से शुरुआत की गई है। माननीय प्रधान मंत्री जी की जो सोच है, वह और बड़ी है। वे चाहते हैं कि देश में हरेक का घर सौर ऊर्जा से सुशोभित हो, सौर ऊर्जा हर घर तक पहुंचे और उसका एक छोटा नमूना इस अयोध्या की सोलर स्ट्रीट लाइट्स लेन को बनाने के काम से किया जा रहा है।

हम बचपन से राम राज्य के बारे में सुनते आ रहे हैं। राम राज्य के प्रति हम सब की तीव्र इच्छा रही है, शायद हमारे पूरे राजनैतिक जीवन में यह इच्छा हमारे समक्ष रही है। भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष माननीय नड्डा जी ने राम राज्य में किस प्रकार से गरीबों की सेवा की जाएगी, उसके बारे में बताया है। जो शोषित, पीड़ित, वंचितों की सेवा करने का काम हमारे प्रधान मंत्री मोदी जी ने गत 10 वर्षों में किया, उसको हम सबके समक्ष रखने का काम भी किया है।

माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की इच्छा है कि राम राज्य में भारत एक सम्पन्न देश हो, आखिर fragile five से top five में माननीय प्रधान मंत्री जी के 10 वर्ष के कार्यकाल में देश आया है। भारत सशक्त हो – हम देखते हैं कि किस प्रकार से भारत डिफेंस के क्षेत्र में आत्मनिर्भर हो रहा है। भारत में सुशासन हो, ईमानदारी देश की पहचान बने, कैसे भारत में संवेदनशीलता के साथ सरकारें चलें, उसके बारे में अभी-अभी नड्डा जी ने विस्तार से बताया है। कैसे भारत स्वस्थ हो, कैसे भारत स्वच्छ हो, कैसे भारत का समावेशी विकास हो और स्वाभिमानी भारत बने, इसके बारे में भी बताया है।

मैं माननीय प्रधान मंत्री जी का धन्यवाद करना चाहता हूं कि उनके कर-कमलों द्वारा प्राण प्रतिष्ठा का कार्यक्रम 22 जनवरी को हुआ और उसके पहले जिस प्रकार से उन्होंने 11 दिन का कठिन अनुष्ठान करके इस देश की आस्था और अस्मिता को उजागर किया, उसके लिए पूरा देश, 140 करोड़ भारतवासी प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी का धन्यवाद करते हैं, नमन करते हैं, उनका साधुवाद करते हैं, धन्यवाद।